बीओआई
वार्ता

बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिन्दी गृहपत्रिका

सितंबर, 2025

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार 2024-25

भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए बैंक ऑफ़ इंडिया को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के अंतर्गत द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। माननीय विधि एवं न्याय मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल जी के कर कमलों से पुरस्कार प्राप्त करते हुए आदरणीय कार्यपालक निदेशक महोदय श्री राजीव मिश्रा। इस अवसर पर उपस्थित हैं माननीय राज्यसभा सांसद श्री दिनेश शर्मा, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की सचिव महोदया श्रीमती अंशुली आर्या एवं अन्य।

बीओआई वार्ता के जून 2025 अंक का विमोचन

दिनांक 12 अगस्त 2025 को प्रधान कार्यालय में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका बीओआई वार्ता के जून 2025 अंक का विमोचन आदरणीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री रजनीश कर्नाटक के कर कमलों द्वारा किया गया। इस दौरान कार्यपालक निदेशकगण, मुख्य महाप्रबंधकगण एवं महाप्रबंधकगण भी उपस्थित रहे।

मुख्य संरक्षक

श्री रजनीश कर्नाटक

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संरक्षक

श्री राजीव मिश्रा

कार्यपालक निदेशक

मार्गदर्शक

श्री अभिजीत बोस

मुख्य महाप्रबंधक

प्रधान संपादक

श्री बिश्वजित मिश्र

महाप्रबंधक

उप प्रधान संपादक

सुश्री मऊ मैत्रा

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री अमरीश कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

श्री राजीव कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

श्री राजेश यादव, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

श्री सचिन यादव, प्रबंधक (राजभाषा)

श्री परवेश कुंडू, प्रबंधक (राजभाषा)

श्री अनूप पी., अधिकारी (राजभाषा)

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों।

प्रधान संपादक,
बैंक ऑफ़ इंडिया, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग, स्टार हाउस, सी-5, जी ब्लॉक,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व)
मुंबई - 400 051

विषय-सूची

बैंकिंग कारोबार में क्षेत्रीय भाषाओं की भूमिका 08

बैंक ऑफ़ इंडिया - 12 दशकों का गौरवशाली सफ़र 10

डिजिटल बैंकिंग- समय की आवश्यकता 13

विकसित भारत @ 2047 16

स्वस्थ जीवन और आत्मज्ञान की कुंजी: अष्टांग योग 18

रानी की बाव - पत्थर पर लिखा एक प्रेम-पत्र 20

अंचलों में हिंदी माह 2025 का आयोजन 22

मेरी भारत यात्रा - यादगार पल 26

बुंदेलखंड के वीर योद्धा आल्हा और ऊदल 27

यादों के झरोखों से - शाखा में मेरा पहला दिन 29

वे भी क्या दिन थे... 31

केरल का स्वर्ग - वायनाड 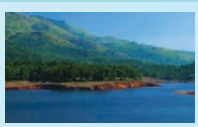 33

साइबर स्वच्छता : डिजिटल सुरक्षा की नींव 35

चित्र काव्य प्रतियोगिता 36

भक्ति, मित्रता और स्मृतियों की शाम 38

कविताएं 39

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिंदी पत्रिका 'बीओआई वार्ता' के सितम्बर 2025 के नवीनतम अंक के माध्यम से मुझे आपसे संपर्क करते हुए अत्यन्त खुशी हो रही है। राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से सितम्बर 2025 को हिंदी माह के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया।

आज देश तीव्र गति से आर्थिक प्रगति के पथ पर अग्रसर है। वर्तमान परिदृश्य में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत व्यावसायिक संस्थान अपने उत्पादों और सेवाओं के प्रचार-प्रसार हेतु हिंदी सहित क्षेत्रीय भाषाओं का सक्रिय रूप से उपयोग कर रहे हैं। भाषा के महत्व को ध्यान में रखते हुए बैंकिंग क्षेत्र में भी निरंतर सुधार और नवाचार किए जा रहे हैं। सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक होने के नाते, हम अपने ग्राहकों को उच्चतम स्तर की सेवाएं प्रदान करने हेतु कृत संकल्प हैं।

गांधीनगर गुजरात में दिनांक 14-15 सितंबर 2025 को आयोजित हिंदी दिवस समारोह एवं 5वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2024-25 हेतु बैंक को राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के अंतर्गत द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति हमारे निरंतर प्रयासों और प्रतिबद्धता का प्रतीक है। इसी प्रकार, आगे भी राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन को जारी रखें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

रजनीश

(रजनीश कर्नाटक)

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका बीओआई वार्ता का सितम्बर 2025 अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। अंकों के लिए भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप का उपयोग किया जाएगा। केंद्रीय सरकार का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह अपने नियंत्रणाधीन कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन सुनिश्चित करे। बैंक ऑफ़ इंडिया भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2025-26 के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर है।

भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देश के अनुसार भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, बैंकों, बीमा कंपनियों, केंद्रीय स्वायत्त निकायों आदि में हिंदी माह या हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया जाता है। बैंक ऑफ़ इंडिया में सितम्बर 2025 को हिंदी माह के रूप में मनाया गया है। बैंक राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के प्रति कृत संकल्प है।

मुझे यह बताते हुए भी अपार हर्ष हो रहा है कि गांधीनगर गुजरात में दिनांक 14-15 सितम्बर 2025 को आयोजित हिंदी दिवस 2025 एवं 5वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में बैंक ऑफ़ इंडिया को राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) प्राप्त हुआ। इसके लिए आप सभी को हार्दिक बधाई। मुझे पूर्ण विश्वास है कि बैंक आगामी समय में राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने का सक्रिय प्रयास करेगा।

इसके साथ ही, मैं बैंक में कार्यरत प्रत्येक स्टाफ सदस्य से अनुरोध करता हूँ कि वे बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका बीओआई वार्ता हेतु अपने मौलिक आलेख एवं रचना अवश्य प्रेषित करें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

(राजीव मिश्रा)

मुख्य महाप्रबंधक की कलम से

प्रिय साथियो,

मुझे आपको सूचित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि बैंक ऑफ़ इंडिया द्वारा तिमाही हिंदी पत्रिका 'बीओआई वार्ता' के सितम्बर 2025 के नवीनतम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

सबसे पहले, मैं भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2024-25 हेतु बैंक को उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के अंतर्गत द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करने पर बैंक के प्रत्येक स्टाफ सदस्य को हार्दिक बधाई देता हूँ। यह पुरस्कार बैंक की राजभाषा हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मैं आशा करता हूँ कि आने वाले समय में हमारे बैंक को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हो।

भारत सरकार की राजभाषा नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन पर आधारित है। भारत के संविधान में राजभाषा हिंदी के विषय में अनुच्छेद 120, अनुच्छेद 210, अनुच्छेद 343 से 351 में विस्तार से व्याख्या की गई है। इस अवसर पर, मैं अनुरोध करता हूँ कि बैंक के प्रत्येक स्टाफ सदस्य को अपना अधिक से अधिक कामकाज राजभाषा हिंदी में करना चाहिए ताकि देश की राजभाषा हिंदी का मान दिन प्रतिदिन बढ़ सके।

बैंक में राजभाषा अधिनियम, 1963, राजभाषा संकल्प, 1968 एवं राजभाषा नियम, 1976 के सभी नियमों का कड़ाईपूर्वक अनुपालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। प्रधान कार्यालय की भांति ही अंचल स्तर पर भी हिंदी माह 2025 का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गईं। प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की ओर से सभी अंचलों, एनबीजी, प्रशिक्षण केंद्रों आदि के लिए ऑनलाइन बैंकिंग उत्पाद एवं राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था।

इस प्रकार के आयोजनों से अवश्य ही राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ता है। हमारे बैंक को राजभाषा के क्षेत्र में कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इस तारतम्यता को बनाये रखने की आवश्यकता है ताकि भविष्य में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हम और भी बेहतर कार्यनिष्पादन करने में सफल हो सकें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

(अभिजीत बोस)
मुख्य महाप्रबंधक

प्रधान संपादक की कलम से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी गृह पत्रिका 'बीओआई वार्ता' के सितंबर 2025 तिमाही अंक को पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। पाठकों की सकारात्मक प्रतिक्रियाओं से यह ज्ञात हुआ कि पिछले 'यात्रा विशेषांक' को व्यापक सराहना प्राप्त हुई है। हर तिमाही अपने साथ कुछ नई उपलब्धियां और प्रेरणादायी अनुभव लेकर आती है। मौजूदा वित्तीय वर्ष की दूसरी तिमाही हमारे लिए विशेष रही है। हिंदी दिवस और हिंदी माह जैसे आयोजन न केवल राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सुदृढ़ करने का माध्यम हैं, बल्कि कर्मचारियों में सृजनात्मक अभिव्यक्ति और सहभागिता की भावना को सशक्त करने का भी मंच है। बैंक परिवार के लिए यह हर्ष का विषय है कि इस वर्ष 800 से अधिक कार्मिकों वाले बैंक मुख्यालयों की श्रेणी में हमारे बैंक के प्रधान कार्यालय को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' ('द्वितीय') प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार समस्त स्टाफ सदस्यों के सामूहिक प्रयासों, नेतृत्व के मार्गदर्शन और निरंतर परिश्रम का परिणाम है।

इस अंक में विविध और ज्ञानवर्धक विषयों को सम्मिलित किया गया है, जैसे अपने बैंक की 120 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा, जीवनशैली में अष्टांग योग की प्रासंगिकता, साइबर स्वच्छता का परिचय और महत्व, आल्हा-ऊदल की ऐतिहासिक वीरगाथा तथा वायनाड के सौंदर्य से भरपूर यात्रा वृत्तांत। इन सभी लेखों का उद्देश्य पाठकों को नई दृष्टि, प्रेरणा और जानकारी प्रदान करना है। इसके साथ ही 'कभी चौराहे पर जाया करो', 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' जैसी भावपूर्ण कविताएं इस अंक में साहित्यिक विविधता का विस्तार करती हैं। चित्र काव्य प्रतियोगिता में बढ़ती प्रविष्टियां पाठकों की सक्रिय सहभागिता का प्रमाण हैं।

संपादकीय टीम का विश्वास है कि यह अंक न केवल आपके ज्ञान को समृद्ध करेगा, बल्कि आपके भीतर सृजनात्मक प्रेरणा भी जागृत करेगा। हम अपने सभी साथियों से आग्रह करते हैं कि वे अपने लेख, विचार और सुझाव साझा कर इस पत्रिका को और अधिक सार्थक बनाने में योगदान दें।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

बिश्वजित मिश्र

(बिश्वजित मिश्र)
महाप्रबंधक

बैंकिंग कारोबार में क्षेत्रीय भाषाओं की भूमिका

अनिंदिता दास
प्रबंधक
आरबीसी कार्यालय
गुवाहाटी अंचल

भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश है जहाँ प्रत्येक राज्य, क्षेत्र और समुदाय की अपनी विशिष्ट भाषा और पहचान है। ऐसे देश में यदि बैंकिंग जैसी महत्वपूर्ण सेवा केवल अंग्रेज़ी या हिंदी तक सीमित रहे, तो करोड़ों लोग इससे वंचित रह जाएँगे। इसीलिए बैंकिंग कारोबार में क्षेत्रीय भाषाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है।

बैंकिंग कारोबार का सीधा संबंध आम नागरिकों से होता है। विशेषकर ग्रामीण भारत में अधिकांश लोग अपनी मातृभाष या क्षेत्रीय भाषा में संवाद करना अधिक सहज महसूस करते हैं। यदि बैंक कर्मचारियों से लेकर फॉर्म, एटीएम, मोबाइल ऐप्स या ग्राहक सेवा तक सब कुछ केवल अंग्रेज़ी या हिंदी में उपलब्ध हो, तो यह इन लोगों के लिए कठिनाई का कारण बन सकता है। ऐसे में क्षेत्रीय भाषाओं में बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध कराना वित्तीय समावेशन को सशक्त बनाने की दिशा में एक सार्थक कदम है।

पूर्वोत्तर भारत जैसे क्षेत्रों में, जहाँ अब भी आर्थिक और शैक्षिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, भाषा एक बड़ी बाधा के रूप में सामने आती है। स्थानीय भाषाओं में बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध कराने से वहाँ के लोगों को इन सेवाओं का लाभ लेना कहीं अधिक आसान हो जाता है। यह न केवल वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देता है, बल्कि लोगों के मन में बैंकों के प्रति विश्वास और आत्मीयता भी पैदा करता है।

आज भी पूर्वोत्तर राज्यों के कई ग्रामीण और जनजातीय इलाकों में लोग बैंकिंग सेवाओं से दूर हैं। इसका कारण स्पष्ट है - भाषा की बाधा, शिक्षा की कमी और डिजिटल साक्षरता का अभाव। लेकिन जब बैंक स्थानीय भाषा में संवाद करते हैं, मोबाइल बैंकिंग ऐप स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध होते हैं, और ग्राहक सेवा क्षेत्रीय भाषा में प्रदान की जाती है, तब एक आम व्यक्ति खुद को बैंकिंग व्यवस्था का अभिन्न हिस्सा मानने लगता है।

त्रिपुरा पूर्वोत्तर का एक छोटा-सा राज्य है जहाँ दूर-दराज़ के गाँवों में रहने वाले अनेक लोग आज भी अंग्रेज़ी या हिंदी के तकनीकी शब्दों से अपरिचित हैं। यदि बैंक केवल इन भाषाओं में सेवाएँ दें, तो बहुत से लोग बैंकिंग प्रक्रिया से वंचित रह जाते हैं। लेकिन जब बैंक अपनी सेवाओं को स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा में प्रदान करते हैं, तो ग्राहकों के लिए उन्हें समझना और अपनाना आसान हो जाता है।

त्रिपुरा की लगभग 30% जनसंख्या जनजातीय समुदायों से आती है, जिनकी अपनी विशिष्ट भाषाएँ और सांस्कृतिक परंपराएँ हैं। यदि बैंक अपने फॉर्म, लेन-देन की जानकारी, एटीएम इंटरफेस और मोबाइल ऐप्स को स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध कराएँ, तो इससे न केवल लोगों को सुविधा होगी, बल्कि वे बैंकिंग प्रणाली से अधिक गहराई से जुड़ेंगे।

डिजिटल इंडिया अभियान के तहत आज बैंकिंग सेवाएँ स्मार्टफोन के माध्यम से दूर-दराज़ इलाकों में भी पहुँच रही हैं। लेकिन त्रिपुरा जैसे राज्य में जहाँ डिजिटल साक्षरता और नेटवर्क कनेक्टिविटी की चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं, वहाँ स्थानीय भाषा में सरल और स्पष्ट बैंकिंग जानकारी प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है।

आज के समय में सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) वित्तीय समावेशन पर विशेष बल दे रहे हैं। इसका उद्देश्य है कि समाज के प्रत्येक वर्ग तक बैंकिंग सुविधाएँ पहुँचें। यह तभी संभव है जब बैंक अपनी सेवाएँ ग्राहक की भाषा में प्रदान करें। उदाहरण के लिए, यदि कोई तमिलनाडु का निवासी अपनी मातृभाषा तमिल में बैंक से जानकारी प्राप्त कर सके, तो वह बैंकिंग के प्रति

अधिक जागरूक और आत्मनिर्भर बनेगा। इससे उसके और बैंक के बीच भरोसे का संबंध भी और प्रगाढ़ होगा।

इसके अलावा, क्षेत्रीय भाषा में बैंकिंग जानकारी मिलने से ग्राहकों को धोखाधड़ी और साइबर अपराधों से भी बचाया जा सकता है। बहुत बार भाषा की समझ न होने के कारण लोग गलत निर्णय ले बैठते हैं या ऑनलाइन ठगी का शिकार हो जाते हैं। क्षेत्रीय भाषाओं में स्पष्ट और सरल जानकारी उपलब्ध होने से ग्राहक अपने वित्तीय निर्णय अधिक सोच-समझकर और सुरक्षित रूप से ले सकते हैं।

आज के डिजिटल बैंकिंग का युग है। इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और यूपीआई जैसे प्लेटफ़ॉर्म आम हो चुके हैं। इन सभी सेवाओं को क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराना डिजिटल क्रांति को और सशक्त बनाएगा। गूगल पे, फोन पे और कई बैंकों ने अपने ऐप्स में क्षेत्रीय भाषाओं का विकल्प देकर इस दिशा में एक सराहनीय पहल की है।

अंतत: बैंकिंग कारोबार में क्षेत्रीय भाषा की भूमिका केवल सुविधा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक उत्तरदायित्व भी है। यह भाषा के माध्यम से नागरिकों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने का एक सशक्त माध्यम है। एक सशक्त राष्ट्र वही होता है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह किसी भी भाषा या क्षेत्र का हो, अपने अधिकारों और सेवाओं तक समान पहुँच रखता हो।

क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करना केवल तकनीकी सुविधा नहीं, बल्कि एक संवेदनशील और दूरदर्शी कदम है। इससे न केवल बैंकिंग सेवाओं का विस्तार होता है, बल्कि आम आदमी का आत्मविश्वास और सहभागिता भी बढ़ती है। अत: बैंकिंग क्षेत्र में क्षेत्रीय भाषाओं की विशेष भूमिका है। इसे बैंकिंग के भविष्य की आधारशिला के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

विभीषण

मुक्ति मिलनी तय है सबको, ध्यान है यदि भगवान में,
चाहे हों विरोधी प्रभु के या साथ हों अभियान में,
साथ वाले, साथ ही गए, पर वो भी गए, जो लड़े थे अभिमान में,
रावण को विचरता मिल गया विभीषण, क्षीरसागर के उद्यान में,
किया विभीषण ने प्रणाम, रावण ने कुछ न दिया उत्तर,
किन्तु जो एक बात थी मन में, वो कह दी ठहर कर,
रावण बोला, विभीषण पिछली बातों पर अब संताप क्या,
अब तो प्रभु के लोक में हैं, पुण्य क्या और पाप क्या,
दु:ख है होता, तुम्हारे लिए, किया था तुमने घात जब,
कर्मफल मिलता वहीं पर, बची है बस बात अब,
आज भी नहीं लेता नाम कोई, सब कहते घाती था विभीषण,
द्रोह होता है बुरा ही, चाहे विरोधी प्रभु हों और भाई रावण,
मुस्कुराता सुनता रहा विभीषण, फिर अंत में ये कहा,
तात अपराधी ही था मैं, आज तक अपराधी रहा,
हालांकि, मैंने सच कहा था, पर सच न भाया आपको
कई बार मारी लात मुझको, पर मैंने समझाया आपको,
हे तात!बड़े भाई थे आप, मुझे लात भी स्वीकार थी,
आपका हित विचारता था, करता था मैं मनुहार भी,
किन्तु मेरी ना सुनी भ्राता और मुझको त्यागा आपने,
क्या विकल्प बचा था जब, खुद निकाला आपने,
कुंभकर्ण ने भी तो आपको, वही बातें समझाई थीं,
मैंने जो बातें कहीं थीं, उसने भी तो दोहरायी थीं,
किन्तु तब थे मौन आप, उसको न त्यागा आपने,
बली था, उपयोगी था वो, ये था भांपा आपने,
कुंभा को रखा मुझको निकाला, क्या ये मेरा विश्वासघात है,
दोषी हूं मैं किंतु घाती नहीं, दुर्बल होना मेरा अपराध है,
उसी युग में ही नहीं, हर युग में सच ये बात है,
और कुछ चाहे हो न हो, दुर्बलता ही अपराध है।।

सौरभ मणि त्रिपाठी
चित्रकूटधाम शाखा
वाराणसी अंचल

आलेख

बैंक ऑफ़ इंडिया - 12 दशकों का गौरवशाली सफ़र

सुनिल कुमार
प्रसंस्करण अधिकारी, बैंक ऑफ़ इंडिया
खुदरा व्यापार केंद्र (आरबीसी)
चेन्नई अंचल

"बैंक किसी भी देश की वित्तीय प्रणाली की रीढ़ होते हैं और आर्थिक विकास को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे व्यक्तियों एवं व्यवसायों को सुरक्षित लेन-देन, बचत, निवेश और ऋण जैसी सुविधाएं प्रदान करके समग्र प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। 120 वर्षों से अधिक समय से सफलतापूर्वक बैंकिंग सेवाएं प्रदान कर रहे बैंक ऑफ़ इंडिया जैसे संस्थान इस विश्वास और स्थिरता के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।"

हमारे देश के सभी बैंकों में 'बैंक ऑफ़ इंडिया' वह बैंक है, जो नाम के साथ-साथ अपनी विरासत और वर्तमान स्थिति में "भारत का बैंक" होने की परिभाषा को चरितार्थ करता है। यह केवल नाम में ही नहीं, बल्कि मूल्यों, विचारों और पहचान चिह्न में भी माँ भारती के आदर्श को अपनाए हुए है, जो हमें वैश्विक स्तर पर भारत की गरिमा के प्रतीक के रूप में विशेष स्थान उपलब्ध कराता है। बैंक ऑफ़ इंडिया परिवार के सभी सदस्य, ग्राहक और हितधारक इस महान दर्शन में सहभागी हैं। बैंक ऑफ़ इंडिया के मौजूदा एक सौ बीसवें वर्ष की यात्रा के दौरान, हम सभी गौरव और मान का अनुभव कर रहे हैं।

विश्व स्तरीय स्वदेशी बैंक बनाने के विचार से प्रेरित होकर भारतीय व्यापार जगत के प्रमुख व्यवसायियों के एक समूह ने 7 सितंबर 1906 को मुंबई में 'बैंक ऑफ़ इंडिया' की स्थापना की। इस बैंक की परिकल्पना भारतीय लोगों के लिए, भारतीय लोगों द्वारा संचालित एक संस्थान के रूप में की गई थी, जिसका उद्देश्य विशेष रूप से वित्तपोषण की आधुनिक व्यवस्था के अनुसार अपने देश के व्यापार और उद्योग को समर्थन प्रदान करना था। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आधुनिक डिजिटल भारत तक बैंक ऑफ़ इंडिया की यात्रा प्रेरणादायी और गौरवशाली रही है।

बैंक ऑफ़ इंडिया की वैश्विक पहुँच और उपलब्धियाँ

- बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) के साथ भारतीय पूंजी बाजार में पहले संयुक्त उद्यम में प्रवेश करने वाला पहला भारतीय बैंक: वर्ष 1921 में, बैंक ऑफ़ इंडिया ने बीएसई क्लियरिंग हाउस का प्रबंधन करने के लिए एक समझौते में प्रवेश किया। यह बाद में बीओआई शेयरहोल्डिंग लिमिटेड नामक एक संयुक्त उद्यम बन गया, जो डिपॉजिटरी सेवाएं प्रदान करता है।
- बैंक ऑफ़ इंडिया ने वर्ष 1946 में लंदन में अपनी विदेश शाखा खोलकर पहला भारतीय बैंक होने का गौरव प्राप्त किया।
- इसके बाद वर्ष 1950 में टोक्यो और ओसाका, जापान में अपनी शाखाएं खोलने वाला देश का पहला बैंक बन गया।
- वर्ष 1973 में बैंक ऑफ़ इंडिया वैश्विक स्तर पर वित्तीय संचार के महत्वपूर्ण मंच, SWIFT (Society for Worldwide Inter Bank Financial Telecommunications) के 239 संस्थापक बैंकों में से एकमात्र भारतीय बैंक रहा था।
- महाद्वीपीय यूरोप में वर्ष 1974 में पेरिस में बैंक ऑफ़ इंडिया ने अपना पहला विदेशी कार्यालय खोला था, जो किसी भी भारतीय बैंक का महाद्वीपीय यूरोप में पहला परिचालन था।
- वर्ष 1989 में बैंक ऑफ़ इंडिया मुंबई में अपनी महालक्ष्मी शाखा में पूरी तरह से कंप्यूटरीकृत शाखा और एटीएम स्थापित करने वाला पहला राष्ट्रीयकृत बैंक बन गया।

- वर्ष 1982 में, बैंक ऑफ़ इंडिया अपने क्रेडिट पोर्टफोलियो का मूल्यांकन करने के लिए हेल्थ कोड सिस्टम शुरू करने वाला देश का प्रथम बैंक बन गया।

वर्तमान उपलब्धियाँ

बैंक ऑफ़ इंडिया ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन और प्रतिबद्धता दिखाते हुए वित्तीय वर्ष 2021 से 2024 की अवधि के दौरान कई प्रतिष्ठित पुरस्कार और मान्यताएँ हासिल की हैं -

ग्रामीण विकास और कृषि

- **एसएचजी बैंक लिंकेज में राष्ट्रीय पुरस्कार :** बैंक ऑफ़ इंडिया को दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY NRLM), ग्रामीण विकास मंत्रालय (MoRD) द्वारा स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) बैंक लिंकेज में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए "राष्ट्रीय पुरस्कार" से सम्मानित किया गया है।
- **कृषि अवसंरचना निधि योजना में उत्कृष्ट बैंक :** भारत सरकार के प्रमुख कार्यक्रम, 'कृषि अवसंरचना निधि योजना (एआईएफ)' के तहत ऋण वितरण और प्रभावी कार्यान्वयन में बैंक को दूसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाला बैंक घोषित किया गया है।

प्रौद्योगिकी, फिनटेक और डिजिटल पहल

- वार्षिक बैंकिंग प्रौद्योगिकी सम्मेलन में मान्यता : बैंक ऑफ़ इंडिया को 18वें वार्षिक बैंकिंग प्रौद्योगिकी सम्मेलन में "सर्वश्रेष्ठ फिनटेक सहयोग (उपविजेता)" और "सर्वश्रेष्ठ आईटी जोखिम एवं प्रबंधन (उपविजेता)" से सम्मानित किया गया है।
- डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने में योगदान : इलेक्ट्रॉनिक भुगतान को बढ़ावा देने के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा स्थापित डिजिटल मिशन के अंतर्गत बैंक को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है।
- वेब-सक्षम एमएसएमई बैंकिंग पुरस्कार (2021): बैंक ऑफ़ इंडिया को वेब-सक्षम एमएसएमई बैंक पुरस्कार 2021 में "सर्वश्रेष्ठ एमएसएमई बैंक-उपविजेता", "सर्वश्रेष्ठ ब्रांडिंग-विजेता" और "सामाजिक योजनाओं को बढ़ावा देने के लिए सर्वश्रेष्ठ बैंक-विजेता" श्रेणियों में सम्मानित किया गया।
- भारतीय बैंक संघ (आईबीए) द्वारा 24 जनवरी, 2025 को आयोजित 20वें वार्षिक बैंकिंग प्रौद्योगिकी सम्मेलन, एक्सपो और प्रशस्ति पत्र समारोह में बैंक ऑफ़ इंडिया को निम्नलिखित तीन प्रतिष्ठित श्रेणियों में 2024 का विशेष उल्लेख पुरस्कार (Special Mention Award) प्राप्त हुआ :
  - ➢ सर्वश्रेष्ठ डिजिटल बिक्री, भुगतान और जुड़ाव
  - ➢ सर्वश्रेष्ठ आईटी जोखिम प्रबंधन
  - ➢ सर्वश्रेष्ठ वित्तीय समावेशन
- 6 जून, 2025 को मुंबई में आयोजित चौथा आईबीए सीआईएसओ शिखर सम्मेलन और प्रशस्ति पत्र समारोह में बैंक ऑफ़ इंडिया को उसके सशक्त साइबर सुरक्षा प्रयासों के लिए तीन प्रमुख श्रेणियों में सम्मानित किया गया:
  - ➢ सार्वजनिक क्षेत्र - बड़े बैंक: साइबर सुरक्षा अनुपालन चैंपियन (विजेता)
  - ➢ साइबर सुरक्षा घटना प्रतिक्रिया परिपक्वता (उपविजेता)
  - ➢ वर्ष का साइबर सुरक्षा परिवर्तन (विशेष उल्लेख)

नियामक और पेंशन निधि प्रदर्शन

- एनपीएस दिवस मान्यता कार्यक्रम में दूसरा स्थान: पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण द्वारा आयोजित एनपीएस दिवस मान्यता कार्यक्रम के तहत कॉर्पोरेट क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बैंक ऑफ़ इंडिया को सभी बैंकों (सार्वजनिक और निजी) में दूसरा स्थान प्राप्त हुआ है।
- अटल पेंशन योजना (एपीवाई) अभियान में उत्कृष्ट प्रदर्शन: बैंक ऑफ़ इंडिया को PFRDA द्वारा अटल पेंशन योजना (एपीवाई)

मना रहा है
राष्ट्र निर्माण व उत्कृष्टता के 12 दशकों की सतत यात्रा

अभियान को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए वित्तीय वर्ष 2021-22, 2023-24 और 2024-25 के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ बैंक के रूप में पुरस्कृत किया गया है।

गुणवत्ता और मानकीकरण के प्रति प्रतिबद्धता

- एसटीक्यूसी प्रमाणन: बैंक ऑफ़ इंडिया इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के एसटीक्यूसी (मानकीकरण परीक्षण और गुणवत्ता प्रमाणन) निदेशालय द्वारा अपने आंतरिक आधिकारिक वेबसाइट के लिए एसटीक्यूसी प्रमाणन प्राप्त करने वाला पहला सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक बन गया है। यह प्रमाणन डिजिटल सुगमता और समावेशी बैंकिंग के प्रति बैंक की दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्टता के लिए सम्मान

राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन और उसके व्यापक प्रचार-प्रसार में उत्कृष्ट योगदान करने वाले कार्यालयों एवं संस्थाओं को सम्मानित करने के लिए भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन कार्यरत राजभाषा विभाग ने वित्तीय वर्ष 2015-16 में 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' योजना का सूत्रपात किया।

बैंक ऑफ़ इंडिया को अपने शानदार प्रदर्शन के लिए इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से कई बार सम्मानित किया गया है, जिसकी गौरवशाली यात्रा का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार हैं :-

- वित्तीय वर्ष 2016-17 के लिए ''ख'' क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राष्ट्रीयकृत बैंक की श्रेणी में - द्वितीय पुरस्कार।
- वित्तीय वर्ष 2019-20 के लिए ''ख'' क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राष्ट्रीयकृत बैंक की श्रेणी में - प्रथम पुरस्कार।
- वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए राष्ट्रीयकृत बैंक और वित्तीय संस्थानों [800 से अधिक कार्मिक वाले (केवल मुख्यालय)] की श्रेणी में - तृतीय पुरस्कार।
- वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए राष्ट्रीयकृत बैंक और वित्तीय संस्थानों में [800 से अधिक कार्मिक वाले (केवल मुख्यालय)] की श्रेणी में - तृतीय पुरस्कार।
- वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए राष्ट्रीयकृत बैंक और वित्तीय संस्थानों में [800 से अधिक कार्मिक वाले (केवल मुख्यालय)] की श्रेणी में - द्वितीय पुरस्कार।

विभिन्न समय अंतराल में हमारे बैंक ऑफ़ इंडिया का नारा

- 1980 - आपके भाग्य का सूचक है यह सितारा (You have a Future in This Star)
- 1990 - आपकी सेवा में सदैव तत्पर (The Bank That Cares)
- 2000 - पथप्रदर्शक सितारा (The Guiding Star)
- 2006 - रिश्तों की जमापूँजी (Relationship beyond Banking)

डिजिटल बैंकिंग और नवाचार के क्षेत्र में निरंतर अग्रणी हमारा बैंक ऑफ़ इंडिया, अपने नारे "रिश्तों की जमापूंजी" के साथ हमेशा ग्राहक सेवा और वित्तीय समावेशन को प्राथमिकता देते हुए राष्ट्र की आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण और सक्रिय भूमिका निभा रहा है। हमारा बैंक भविष्य की दिशा में आगे बढ़ते हुए आधुनिक तकनीक और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के दौर में अपनी पहचान को और अधिक सशक्त कर रहा है। इसके साथ ही, यह देश के सतत विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) में सक्रिय भूमिका निभाते हुए महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

बैंक ऑफ़ इंडिया बैंकिंग क्षेत्र के अनेक मानकों पर सभी बैंकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन रहा है। आने वाले वर्षों में हमारा बैंक नई ऊँचाइयों को छूएगा और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका को और अधिक मज़बूत बनाएगा।

एक सुदृढ़ बैंकिंग प्रणाली ही वित्तीय समावेशन का आधार है, जो हर नागरिक को आर्थिक मुख्यधारा से जोड़कर देश के समृद्ध भविष्य का निर्माण करती है।

डिजिटल बैंकिंग- समय की आवश्यकता

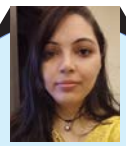

दीपिका रामनानी
सूचना प्रौद्योगिकी विभाग
पुणे आंचलिक कार्यालय

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहां बैंकिंग का स्वरूप सम्पूर्ण तरीके से परिवर्तित हो चुका है। आज 'बैंकिंग' तथा 'डिजिटल बैंकिंग' लगभग एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द बन गए हैं। विश्वव्यापी डिजिटल क्रांति का सबसे बड़ा प्रभाव वित्तीय क्षेत्र पर पड़ा है, जिसने ग्राहकों को अपने घर बैठे ही बैंकिंग करने की सुविधा प्रदान करता है। आज एक ऐसा दौर आ चुका है जब हमें याद ही नहीं है कि हम आखिरी बार कब बैंक में किसी कार्य के लिए गए थे। यह स्पष्ट संकेत है कि ग्राहकों के लिए बैंकिंग सेवाएं पहले की तुलना में अधिक सुलभ, सरल और ग्राहक-केंद्रित हो चुकी है, जिन्हें ग्राहक अपने स्मार्टफोन के माध्यम से पलभर में कर सकता है।

यह सब डिजिटल बैंकिंग के आगमन के पश्चात संभव हो पाया है। आज जो वित्तीय संस्थान डिजिटल बैंकिंग को पूरी तरह से अपनाने में सक्षम है वही सही मायने में बैंकिंग जगत में अग्रणी बन सकते हैं। इसी कारणवश डिजिटल बैंकिंग अब हर किसी के लिए समय की आवश्यकता बन चुका है।

डिजिटल बैंकिंग क्या है?

डिजिटल बैंकिंग का आशय विभिन्न बैंकिंग गतिविधियों और सेवाओं को ऑनलाइन या इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफार्मों के माध्यमों से उपलब्ध कराना है। इसमें खाता बैलेंस की जांच, धन का अंतरण, बिल का भुगतान, ऋण के लिए आवेदन आदि सभी कार्य शामिल हैं। इसने बैंक शाखाओं में जाने की आवश्यकता को समाप्त कर दिया है। इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई ,डिजिटल वॉलेट, आधार सक्षम भुगतान पणाली जैसी सेवाएँ डिजिटल बैंकिंग के अंतर्गत आती हैं। डिजिटल बैंकिंग अधिक सुविधा और पहुँच प्रदान करता है, जिससे बैंकिंग सेवाएँ 24x7 कहीं से भी इंटरनेट कनेक्शन के साथ उपलब्ध हो सकती हैं।

भारत में डिजिटल बैंकिंग ने लोगों की वित्तीय सेवाओं के उपयोग का स्वरूप बदल दिया है, जिससे बैंकिंग अधिक सुलभ, कुशल, पारदर्शी और सुरक्षित हो गई है। इसने व्यक्तियों और व्यवसायों के वित्तीय लेनदेन के तरीके में क्रांति लाई है। डिजिटल बैंकिंग की विशेषता यह है कि स्मार्टफोन, टैबलेट और कंप्यूटर जैसे उपकरणों का उपयोग करके आप कई वित्तीय कार्यों को अपने घर, कार्यालय या यात्रा के दौरान भी आराम से कर सकते हैं, जैसे बैंकिंग एक क्लिक पर उपलब्ध है।

भारत में डिजिटल बैंकिंग के विकास का इतिहास

भारत में डिजिटल बैंकिंग की शुरुआत 1990 के दशक में हुई जब भारतीय बैंकों ने बैलेंस पूछताछ और फंड ट्रांसफर जैसी बुनियादी ऑनलाइन सेवाएं प्रदान करनी शुरू की। किंतु वास्तविक परिवर्तन 2010 के दशक में स्मार्टफोन्स और इंटरनेट की व्यापक पहुंच के साथ शुरू हुआ। इसी काल में मोबाइल बैंकिंग ऐप्स उभरने लगे, जिससे ग्राहकों को अपने स्मार्टफोन के माध्यम से विभिन्न बैंकिंग कार्य करने की अनुमति मिली। इसी दौरान कई फिनटेक

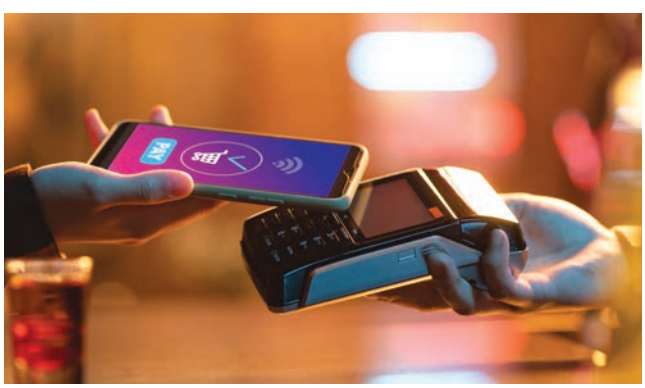

स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रवेश कर चुके थे जो भुगतान, उधारी, धन प्रबंधन के लिए अभिनव समाधान प्रदान कर रहे थे। इन स्टार्टअप्स ने भारत की बड़ी अनबैंक्ड और अंडरबैंक्ड जनसंख्या का लाभ उठाया तथा डिजिटल माध्यमों के जरिए वित्तीय समावेशन का निर्माण किया।

2016 में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) की शुरुआत डिजिटल बैंकिंग की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध हुई। यूपीआई ने मोबाइल ऐप्स के माध्यम से बैंक खातों के बीच तत्काल और निर्बाध फंड ट्रांसफर की सुविधा देकर डिजिटल भुगतान में क्रांति ला दी। भारत सरकार की 'डिजिटल इंडिया' और 'प्रधानमंत्री जन धन योजना' जैसी पहलें डिजिटल सशक्तिकरण की दिशा में निर्णायक सिद्ध हुईं। 2016 में नोटबंदी ने एक उत्प्रेरक का काम किया जिससे कई भारतीयों ने डिजिटल भुगतान विधियों को बड़े पैमाने पर अपनाया।

वर्ष 2020 में आई कोविड महामारी ने डिजिटल बैंकिंग के महत्व को और भी उजागर किया क्योंकि लोग लॉकडाउन और सुरक्षा चिंताओं के कारण ऑनलाइन लेन-देन की ओर अग्रेषित हुए। पारंपरिक बैंकों ने भी डिजिटल परिवर्तन को अपनाया, तथा अपने ऑनलाइन और मोबाइल बैंकिंग सेवाओं को बढ़ाया। आरबीआई ने भी 'अपने ग्राहक को जानिए' (केवाईसी) मानदंडों को डिजिटल प्लेटफार्मों के लिए अनुकूलित किया जिससे आधार के माध्यम से दूरस्थ ग्राहक प्रमाणन संभव हुआ। आरबीआई ने डिजिटल बैंकिंग सेवाओं के लिए पेपरलेस, स्व-सेवा डीबीयू केंद्रों की स्थापना को भी बढ़ावा दिया।

डिजिटल बैंकिंग के प्रकार:-

डिजिटल बैंकिंग के कई प्रकार हैं जिनमे से कुछ महत्वपूर्ण प्रकार निम्नलिखित हैं:-

i. **मोबाइल एवं इंटरनेट बैंकिंग:** बैंक अपने मोबाइल बैंकिंग ऐप्स और वेबसाइटों के माध्यम से इंटरनेट बैंकिंग सेवाएं प्रदान करते हैं, जिससे ग्राहकों को ऑनलाइन बैंकिंग लेनदेन करने की सुविधा मिलती है।

ii. **यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई):** यूपीआई एक ऐसी भुगतान प्रणाली है जिसे भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) द्वारा विकसित किया गया है जो मोबाइल डिवाइस के माध्यम से बैंकों के बीच तत्काल धन अंतरण की सुविधा प्रदान करती है।

iii. **डिजिटल वॉलेट:** पेटीएम, गूगल पे, फोनपे जैसे कई अन्य मोबाइल वॉलेट डिजिटल बैंकिंग के स्रोत के रूप में लोकप्रिय हो गए हैं जिससे उपयोगकर्ता पैसे जमा कर सकते हैं और विभिन्न भुगतान कर सकते हैं।

iv. **आधार-सक्षम भुगतान प्रणाली (एईपीएस):** यह प्रणाली बायोमेट्रिक पहचान का उपयोग करके आधार प्रमाणीकरण द्वारा वित्तीय लेन-देन सुनिश्चित करती है।

v. **पॉइंट ऑफ सेल (पीओएस) टर्मिनल:** खुदरा दुकानों और व्यवसायों में पीओएस टर्मिनल कार्ड-आधारित भुगतान को सक्षम करते हैं। इसमें क्रेडिट/डेबिट कार्ड और संपर्क रहित भुगतान शामिल हैं।

vi. **ऑनलाइन भुगतान गेटवे:** कई बैंक तथा संस्थान जैसे रेजरपे, सीसीएवेन्यू आदि के भुगतान गेटवे ई-कॉमर्स वेबसाइटों और व्यवसायों के लिए सुरक्षित ऑनलाइन लेनदेन प्रदान करते हैं।

vii. **भारतीय बिल भुगतान प्रणाली (बीबीपीएस):** यह एक केंद्रीयकृत भुगतान प्रणाली है जो बिजली, पानी, गैस आदि जैसी विभिन्न सेवाओं के लिए ऑनलाइन बिल भुगतान करने की सेवा प्रदान करती है।

डिजिटल बैंकिंग की चुनौतियाँ:-

डिजिटल बैंकिंग की वृद्धि के बावजूद इसमें कुछ चुनौतियाँ हैं:-

डिजिटल साक्षरता: भारतीय जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा डिजिटल तकनीकों और बैंकिंग प्लेटफार्मों के बारे में परिचित नहीं है। इसी कारणवश जनता द्वारा डिजिटल बैंकिंग सेवाओं को अपनाने में बाधाएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

इंटरनेट कनेक्टिविटी: भारत के कुछ दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित इंटरनेट पहुँच ऑनलाइन बैंकिंग सेवाओं के प्रभावी ढंग से उपयोग को बाधित कर सकता है।

सुरक्षा के मुद्दे: साइबर सुरक्षा खतरे और धोखाधड़ी डिजिटल बैंकिंग के लिए प्रमुख चिंताएँ हैं। इसके परिणामस्वरूप बैंकों द्वारा मजबूत सुरक्षा उपायों को सुनिश्चित करना अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। भारतीय रिज़र्व बैंक इनोवेशन हब धोखाधड़ी को रोकने और सुरक्षित लेनदेन सुनिश्चित करने के लिए "भुगतान के लिए डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (दीपीआईपी)" विकसित कर रहा है।

नियामक अनुपालन: बैंकों और वित्तीय संस्थानों के लिए डेटा सुरक्षा सुनिश्चित करना और इससे जुड़े नियमों का पालन करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

ग्राहक सहायता: डिजिटल बैंकिंग उपयोगकर्ताओं के लिए तकनीकी संबंधी मुद्दों पर प्रभावी और विश्वसनीय ग्राहक सहायता प्रदान करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

भुगतान अवसंरचना: भारतीय भुगतान परिवेश में एक निर्बाध और अंत:क्रियाशील डिजिटल भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने के लिए विभिन्न हितधारकों के बीच समन्वय की आवश्यकता है जो चुनौतीपूर्ण सिद्ध हो सकता है।

ग्रामीण क्षेत्र: सीमित बुनियादी ढांचे वाले ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल बैंकिंग सेवाओं का विस्तार करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

प्रौद्योगिकी अवसंरचना: बैंकों और वित्तीय संस्थानों के लिए आवश्यक प्रौद्योगिकी अवसंरचना को बनाए रखना और अपडेट करना महंगा और कठिन हो सकता है।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें प्रौद्योगिकी में निवेश, साइबर सुरक्षा उपाय, कर्मचारी प्रशिक्षण, नियामक अनुपालन, और ग्राहकों की शिक्षा शामिल है। इसके फलस्वरूप ग्राहकों के लिए एक सुरक्षित और सहज डिजिटल बैंकिंग अनुभव सुनिश्चित किया जा सकेगा।

निष्कर्ष:-

भारत में डिजिटल बैंकिंग के भविष्य के लिए विशाल संभावनाएँ हैं जो प्रौद्योगिकी की प्रगति, बदलता उपभोक्ता व्यवहार और सहायक नियामक वातावरण के संयोजन से संभव हो सकता है। विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक भारत, आने वाले वर्षों में और तेजी से डिजिटल बैंकिंग की ओर बढ़ रहा है।

उभरती हुई प्रौद्योगिकियाँ जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) भारत में डिजिटल बैंकिंग के अनुभव में क्रांतिकारी बदलाव ला रहे हैं। ये प्रौद्योगिकियाँ ग्राहक डेटा की विशाल मात्रा का विश्लेषण कर व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि, वित्तीय सलाह और उत्पाद सिफारिशें प्रदान कर सकती हैं। चैटबोट्स और वर्चुअल असिस्टेंट अधिक उपयोगी होते जा रहे हैं, जो तात्कालिक ग्राहक सहायता और वास्तविक समय में मदद प्रदान कर रहे हैं। एआई संचालित क्रेडिट स्कोरिंग मॉडल भी उधारी के निर्णयों को सुदृढ़ कर रहे हैं, जिससे व्यक्तियों और छोटे व्यवसायों के लिए क्रेडिट लेना अधिक सुलभ हो रहा है।

ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी डिजिटल बैंकिंग में सुरक्षा और पारदर्शिता को बढ़ाने में सहायक हो सकती है। लेनदेन के लिए एक अपरिवर्तनीय खाता प्रदान करके, ब्लॉकचेन धोखाधड़ी को रोकने, विभिन्न प्रक्रियाओं को सरल बनाने और विभिन्न वित्तीय गतिविधियों में मध्यस्थों की आवश्यकता को कम करने में मदद कर सकता है। ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी अभी भी अपने प्रारंभिक चरणों में है परंतु ये रेमिटेंस, सीमा पार लेनदेन, और आपूर्ति श्रृंखला वित्तपोषण जैसे क्षेत्रों में बेहद उपयोगी हो सकता है।

डिजिटल बैंकिंग देश के वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है। इससे बेहतर वित्तीय समावेशन और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। इसके उपयोग से नकद-आधारित लेन-देन कम होने की संभावना है। इससे भ्रष्टाचार को कम करने और वित्तीय पारदर्शिता को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। मोबाइल प्रौद्योगिकी, एआई और एमएल की संभावनाओं, डिजिटल भुगतान के बढ़ते उपयोग और ब्लॉकचेन की खोज के साथ भारत का डिजिटल बैंकिंग क्षेत्र महत्वपूर्ण क्रांति के लिए तैयार है।

विकसित भारत @ 2047

इप्सिता बिस्वाल
अधिकारी
पोड़ा अस्तिया शाखा,
बारिपदा अंचल

"भारत केवल भूगोल का टुकड़ा नहीं, बल्कि एक जीवंत आत्मा है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता, विविधता और एकता, विज्ञान और अध्यात्म एक साथ साँस लेते हैं।"

1947 में हमने स्वतंत्रता प्राप्त की थी, पर 2047 में हमें केवल आज़ादी का उत्सव नहीं मनाना है, बल्कि एक विकसित, आत्मनिर्भर और समृद्ध भारत का निर्माण करना है- एक ऐसा भारत जो न केवल अपने नागरिकों के लिए अवसरों का द्वार खोले बल्कि पूरे विश्व को दिशा दिखाए।

आज भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था और सबसे बड़ा लोकतंत्र है। 2024-25 में हमारी जीडीपी लगभग चार ट्रिलियन डॉलर तक पहुँच चुकी है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक का अनुमान है कि 2030 तक भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। अनुमान है कि 2047 तक हम 30 ट्रिलियन डॉलर के आँकड़े को पार कर जाएँगे। यह केवल आर्थिक उपलब्धि नहीं, बल्कि उस राष्ट्र की तस्वीर है जहाँ हर नागरिक को अवसर और सम्मान मिलेगा।

भारत की सैन्य शक्ति भी विश्व में अग्रणी है। भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना में लगभग 14 लाख सक्रिय सैनिक हैं, जो इसे दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी सैन्य शक्ति बनाते हैं। भारत का रक्षा बजट चौथे स्थान पर है, जो आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। भारत ने स्वदेशी मिसाइल प्रणालियाँ जैसे अग्नि, पृथ्वी, और नाग विकसित की हैं, जो उसकी रणनीतिक शक्ति को बढ़ाती हैं।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अंतरिक्ष विज्ञान क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। चंद्रयान, मंगलयान, और गगनयान जैसे मिशन भारत की वैज्ञानिक दक्षता और आत्मनिर्भरता के प्रतीक हैं। इन अभियानों ने भारत को वैश्विक अंतरिक्ष समुदाय में सम्मानजनक स्थान दिलाया है।

लोकतंत्र की असली ताकत वही है जो समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचती है। इस यात्रा में बैंकिंग क्षेत्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीयकरण से लेकर जन धन योजना तक, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने वित्तीय समावेशन को समाज के अंतिम पायदान तक पहुँचाया है। आज भारत में 50 करोड़ से अधिक जन धन खाते खुल चुके हैं। यूपीआई लेन-देन प्रतिमाह 1,000 करोड़ से अधिक पहुँच चुका है। ये आँकड़े बताते हैं कि डिजिटल बैंकिंग ने हमारे समाज में गहराई तक परिवर्तन किया है। भविष्य में ब्लॉकचेन तकनीक, एआई आधारित क्रेडिट सिस्टम और ग्रीन बैंकिंग भारत को वैश्विक वित्तीय केंद्र बनाएँगे और भारत फिर सोने की चिड़िया कहलाएगा।

भारत की सबसे बड़ी ताकत उसकी जनसंख्या भी है जिसकी 65% से अधिक आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है। यही युवा शक्ति हमें डेमोग्राफ़िक डिविडेंड का लाभ देती है। यदि शिक्षा, कौशल विकास और अनुसंधान को उचित प्रोत्साहन मिले, तो यही युवा पीढ़ी भारत को स्टार्टअप हब और वैश्विक नवाचार केंद्र बना देंगे। पहले ही भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन चुका है।

शिक्षा के क्षेत्र में नई शिक्षा नीति (एनईपी 2020) ने एक नई दिशा और सोच प्रदान की है। 2047 तक हमारा लक्ष्य 100% साक्षरता और अनुसंधान आधारित शिक्षा प्रणाली स्थापित करना है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में आयुष्मान भारत योजना ने करोड़ों गरीब परिवारों को सुरक्षा कवच प्रदान किया है। भारत आज विश्व का सबसे बड़ा वैक्सीन उत्पादक देश है और 2047 तक हम स्वास्थ्य सेवाओं के निर्यात में भी अग्रणी बन जाएंगे।

भारत की आत्मा उसकी विविधता में एकता है। अलग-अलग धर्म, भाषाएँ और संस्कृतियाँ एक सूत्र में बंधी हुई हैं। यही विविधता

में एकता हमें मजबूत बनाती है। भारत का संविधान हर धर्म को बराबरी का अधिकार देता है और यही धर्मनिरपेक्षता 2047 के भारत की नींव होगी। गंगा-जमुनी तहज़ीब केवल इतिहास की धरोहर नहीं, बल्कि हमारे भविष्य का मार्गदर्शन भी है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत का स्थान निरंतर ऊँचा हो रहा है। हाल ही में हुई जी20 की अध्यक्षता ने भारत की वैश्विक नेतृत्व क्षमता को प्रदर्शित किया। BRICS, QUAD, ASEAN और SCO के साथ साझेदारी हमें व्यापार और सुरक्षा दोनों मोर्चों पर मजबूत करती है। 2023-24 में भारत का कुल निर्यात 770 बिलियन डॉलर तक पहुँचा। 2047 तक भारत दुनिया के शीर्ष तीन निर्यातक देशों में शामिल हो सकता है। मेक इन इंडिया और स्टार्टअप इंडिया जैसे अभियान इस लक्ष्य को वास्तविकता में बदल रहे हैं।

ऊर्जा और पर्यावरण भी हमारे विकास की धुरी होंगे। आज भारत सौर ऊर्जा उत्पादन में विश्व का चौथा सबसे बड़ा देश है। 2047 तक हम जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता घटाकर नवीकरणीय ऊर्जा से अपनी अधिकांश आवश्यकताएँ पूरी करेंगे। इस दिशा में इंटरनेशनल सोलर अलायंस जैसी पहल भारत को ग्रीन एनर्जी लीडर बनाएँगी।

कृषि क्षेत्र भी 2047 में पूरी तरह स्मार्ट एग्रीकल्चर पर आधारित होगा। आधुनिक तकनीक, ड्रोन, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (एआई) और जैविक खेती भारत को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर ही नहीं, बल्कि निर्यातक बनाएँगे। ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग और डिजिटल सेवाओं का प्रसार किसानों को सस्ती ऋण सुविधाएं प्रदान करेगा और कृषि-फिनटेक का विकास होगा।

2047 का भारत केवल महानगरों तक सीमित नहीं होगा, बल्कि हर गाँव, हर किसान, हर मज़दूर और हर महिला उसमें समान भागीदार होगी। जब तक विकास का फल समाज के अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुँचता, तब तक राष्ट्र की यात्रा अधूरी रहेगी।

अंततः, 2047 का भारत केवल आँकड़ों में अग्रणी नहीं होगा, बल्कि मानवीय मूल्यों में भी श्रेष्ठ होगा। यहाँ विज्ञान और अध्यात्म, परंपरा और आधुनिकता, उद्योग और पर्यावरण, धर्म और धर्मनिरपेक्षता का सुंदर संतुलन होगा। जब हम आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक न्याय और वैश्विक नेतृत्व के मार्ग पर एकसाथ आगे बढ़ेंगे, तभी पूरी दुनिया गर्व से कहेगी -

"यही है भारत - विकसित, समृद्ध और विश्वगुरु।"

असली भारत तो मेरा गांवों में बसता है..

असली भारत तो मेरा गांवों में बसता है...
लहराती-बलखाती फसलों से जब...
यहां के खेतों का यौवन सजता है...
वो बारिश की पहली बूंदों पर जब...
मिट्टी की सौंधी-सौंधी खुशबू से...
गांव की गलियां और चमन महकता है...
पुलकित मन तब बस यही तो कहता है...
असली भारत तो मेरा गांवों में बसता है...

खिलखिलाती-सी सर्दी की धूप...
वो हरियाली वो पीपल की शीतल छांव...
स्वर्ग सरीख लागे अपना वो प्यारा गांव...
वो चिड़ियों का कल-कल करता स्वर...
पशुओं के गले में बजता घुंघरुओं का वो मधुरस्वर...
छाए बसंत पेड़ो पे लेकर अंगड़ाई जब...
सजे कपोलों से हर डाल कुंदन सा रमता है...
हर गांव ही मानो जैसे...
कृष्ण के गोकुल धाम सा लगता है...
असली भारत तो मेरा गांवों में बसता है...

वो मस्ती में बहता नदियों का पानी...
नैया खेता मांझी गाए लहरों की कहानी...
वो स्नेह वो सहयोग वो भाईचारा वो सम्मान...
लगे गांवों को है ईश्वर का ये वरदान...
हर किसान जहां मेहनत से अपने...
आत्मनिर्भर भारत का एक नया सवेरा...
एक सुनहरा कल लिखता है...
गर्व से कहता हूं मैं तो यारों...
असली भारत तो मेरा गांवों में बसता है...

सुनील कुमार राउत
अधिकारी
संत जेवियर स्कूल शाखा
बोकारो अंचल

स्वस्थ जीवन और आत्मज्ञान की कुंजीः अष्टांग योग

सरिता वर्मा
राजभाषा अधिकारी
मदुरै अंचल

योग भारत की प्राचीन संस्कृति की अमूल्य देन है। यह केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा को एक सूत्र में पिरोने वाला ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति को स्वयं और प्रकृति को एकात्मक भाव से देखने में सक्षम बनाता है। योग की उत्पत्ति बहुत प्राचीन है, जिसके प्रमाण हड़प्पा सभ्यता से मिलते हैं। श्रीमद्भगवतगीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि, "योग: कर्मसु कौशलम्" अर्थात् योग से कर्मों में कुशलता आती है। वास्तव में योग एक ऐसी साधना है जो जीवन के हर क्षेत्र में संतुलन, सामंजस्य और दक्षता लाने में सहायक है।

कठोपनिषद योग की परिभाषा इस प्रकार देता है:- "जब पाँचों इन्द्रियाँ और मन शांत हो जाते हैं तथा बुद्धि स्थिर हो जाती है, वही अवस्था योग है।'' यह परिभाषा स्पष्ट करती है कि योग का उद्देश्य केवल शारीरिक स्वास्थ्य नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन भी है। आज के तनावपूर्ण और भागदौड़ भरे जीवन में, जहाँ मनुष्य मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, डिप्रेशन जैसे रोगों से घिरा रहता है, वहाँ योग बिगड़ती जीवनशैली को सुधारने का सर्वोत्तम उपाय और एक वरदान की तरह कार्य करता है। यह शरीर को स्वस्थ रखने के साथ-साथ मन को भी शांत और सकारात्मक बनाता है।

अष्टांग योग : अनुशासित जीवन और आध्यात्मिक उन्नति का आधार

पतंजलि के योगसूत्र के द्वितीय अध्याय 'साधना पद' में अष्टांग योग का उल्लेख मिलता है। यह योग का वह मार्ग है जो मनुष्य को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से परिपूर्ण बनने की दिशा दिखाता है। पतंजलि के अनुसार योग के आठ अंग हैं - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। इनमें प्रारंभिक चार चरण शरीर और व्यवहार को संतुलित करते हैं, जबकि अंतिम चार चरण साधक को उच्चतर चेतना और आत्मज्ञान की ओर ले जाते हैं।

1. यम (संयम और नैतिक आचरण) - यह सिखाता है कि हमें किन अनुचित कार्यों से बचना चाहिए और जीवन में नैतिक मर्यादाओं का पालन कैसे करना चाहिए। यह आत्मसंयम, सत्यनिष्ठा तथा दूसरों के प्रति उचित और संवेदनशील व्यवहार पर बल देता है। इसका मूल भाव है - "जैसा व्यवहार आप अपने लिए चाहते हैं, वैसा ही दूसरों के साथ करें।"

अष्टांग योग में पाँच यमों के बारे में बताया गया है :- अहिंसा (किसी को कष्ट न देना), सत्य (सदैव सत्य बोलना), अस्तेय (चोरी या अनुचित लाभ न लेना), ब्रह्मचर्य (संयमित और संतुलित जीवन) और अपरिग्रह (अधिक संग्रह न करना)।

2. नियम (अनुशासन और आत्मशुद्धि) - नियम बताता है कि हमें क्या करना चाहिए। यह आत्म-अनुशासन, आध्यात्मिक जागरूकता और शारीरिक एवं मानसिक शुद्धि पर आधारित है। इसके अंतर्गत नियमित रूप से मंदिर जाना, भोजन से पूर्व प्रार्थना करना, आध्यात्मिक ग्रंथों का अध्ययन करना तथा सर्वशक्तिमान पर विश्वास बनाए रखना जैसे आचरण शामिल हैं।

अष्टांग योग में नियमों की संख्या पाँच दी गई है :- शौच (शुद्धता), संतोष (संतुष्ट रहना), तप (संयम और प्रयास), स्वाध्याय (आध्यात्मिक अध्ययन) और ईश्वर प्राणिधान (ईश्वर में विश्वास और समर्पण)।

3. आसन (शरीर की स्थिरता और सहजता) - पतजंलि ने आसन को परिभाषित करते हुए कहा है - 'स्थिरसुखमासनम्' अर्थात् स्थिर और सुखपूर्वक बैठना ही आसन है। इसका भाव यह है कि साधक अपनी क्षमता के अनुसार जिस प्रकार बिना हिले-डुले, बिना किसी पीड़ा के, लंबे समय तक स्थिर भाव से सुखपूर्वक बैठ सके, वही आसन उसके लिए उपयुक्त है। आसन केवल शारीरिक

व्यायाम नहीं है, बल्कि साधना के लिए शरीर और मन को तैयार करने का साधन है। पारंपरिक रूप से 84 आसन प्रसिद्ध हैं जिसमें पद्मासन, शीर्षासन, स्वस्तिकासन, दण्डासन आदि विविध प्रकार के आसन शामिल हैं।

4. प्राणायाम (श्वास का नियंत्रण) - 'प्राण' का अर्थ है जीवनशक्ति और 'आयाम' का अर्थ है नियंत्रण। पतंजलि के अनुसार, "तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयो: गतिविच्छेद: प्राणायाम:" अर्थात् जब श्वास-नि:श्वास की गति को संयमित और नियंत्रित किया जाता है, वही प्राणायाम है।

प्राणायाम के तीन चरण होते हैं -

i. पूरक - पूरक का अर्थ है श्वास को भीतर खींचकर फेफड़ों को पूर्ण रूप से भरना।

ii. कुम्भक - कुम्भक का अर्थ है भीतर खींची गई श्वास को कुछ समय तक रोक कर रखना।

iii. रेचक - रेचक का अर्थ है भीतर रोकी गई श्वास को नियंत्रित एवं नियमित विधि से धीरे-धीरे बाहर निकालना।

यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि मनमानी या तीव्र गति से श्वास को खींचना, रोकना और छोड़ना प्राणायाम की सही विधि नहीं है। सही विधि से किया गया प्राणायाम शरीर और मन दोनों को सशक्त बनाता है। यह हृदय को मजबूत करता है, रक्त संचार को संतुलित रखता है और मानसिक स्थिरता प्रदान करता है। चिकित्सकों के अनुसार भी नियमित प्राणायाम से तनाव कम होता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती।

5. प्रत्याहार (इंद्रियों का नियंत्रण) - यह अवस्था तब उत्पन्न होती है जब मन बाहर की वस्तुओं से हटकर भीतर की ओर उन्मुख होता है। पतंजलि कहते हैं, "स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहार:।" अर्थात् जब इंद्रियाँ अपने विषयों से हटकर मन के नियंत्रण में आ जाती हैं, तो वह प्रत्याहार कहलाता है। प्रत्याहार साधक को बाहरी आकर्षणों से दूर ले जाकर आंतरिक शांति की दिशा की ओर ले जाता है।

6. धारणा (एकाग्रता का अभ्यास) - धारणा को ध्यान की पहली सीढ़ी माना जाता है। इससे मन की चंचलता घटती है और एकाग्रता बढ़ती है। "देशबन्धश्चित्तस्य धारणा।" अर्थात् जब मन किसी एक स्थान या विषय पर स्थिर हो जाता है, वही धारणा है। साधक अपने चित्त को हृदय, नासिका, या किसी प्रतीक जैसे एक बिंदु पर केंद्रित करता है।

7. ध्यान (मन की एकाग्र धारा) - यह चिंता, तनाव और नकारात्मकता को मिटाकर साधक को भीतर से उजाला प्रदान करता है। "तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्।" जब मन बिना विचलित हुए किसी एक विचार या ईश्वर पर निरंतर प्रवाहित रहता है, तो उसे ध्यान कहा जाता है। ध्यान के अभ्यास से मन शांत, स्थिर और गहन होता है।

8. समाधि (परम एकत्व की अवस्था) - यह वह स्थिति है जहाँ साधक और परमात्मा का भेद मिट जाता है। "तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधि:।" अर्थात् जब ध्यान में केवल ध्येय (जिस पर ध्यान किया जा रहा है) ही शेष रह जाता है और साधक अपने अस्तित्व का बोध भूल जाता है, तब वह अवस्था समाधि होती है। यही आत्मज्ञान और मुक्ति का चरम रूप है।

आज के भागदौड़ भरे जीवन में अष्टांग योग का महत्व और भी बढ़ जाता है। इसके नियमित अभ्यास से शरीर, मन और आत्मा तीनों स्तरों पर संतुलन स्थापित होता है। आसनों के अभ्यास से शरीर लचीला, मजबूत और रोगमुक्त बनता है। यह मांसपेशियों को सुदृढ़ करता है, पाचन क्रिया में सुधार लाता है, रक्त परिसंचरण को सक्रिय रखता है और पीठ दर्द, मधुमेह, उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों को नियंत्रित रखने में सहायक होता है। प्राणायाम और ध्यान के अभ्यास से मन शांत होता है, तनाव घटता है और एकाग्रता बढ़ती है। इससे चिंता, अवसाद और अनिद्रा जैसी समस्याओं से मुक्ति मिलती है। मन की स्पष्टता से निर्णय लेने की क्षमता निखरती है और अविद्या दूर होने पर आत्मज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित होती है। जैसे-जैसे साधक योग के प्रत्येक अंग का अभ्यास करता है, वैसे-वैसे चित्त की अशुद्धियाँ दूर होकर अंत:करण निर्मल होता जाता है।

यम और नियम के पालन से व्यक्ति में नैतिकता, संयम और आत्म-अनुशासन विकसित होता है। यह क्रोध, ईर्ष्या और भय जैसी नकारात्मक भावनाओं पर नियंत्रण प्रदान कर भावनात्मक स्थिरता लाता है। अंतत: अष्टांग योग का उद्देश्य आत्म-साक्षात्कार है जो हमें हमारे भीतर की गहराई से जोड़ता है। यह जीवन के उच्च उद्देश्य को समझने और आध्यात्मिक जागृति प्राप्त करने में सहायक होता है। इसलिए हमें अपने दैनिक जीवन में योग को स्थान देना चाहिए और नियमित रूप से इसका अभ्यास करना चाहिए। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है - "अभ्यास चीजों को आसान बना देता है। योग के माध्यम से ज्ञान, ज्ञान के माध्यम से प्रेम और प्रेम के माध्यम से परमानंद की प्राप्ति होती है।" इसी परमानंद से जीवन के समस्त दुखों का अंत होता है और सच्चे आनंद का उदय होता है।

रानी की बाव - पत्थर पर लिखा एक प्रेम-पत्र

शैलेंद्र कुमार दुबे
उप महाप्रबंधक,
आंचलिक लेखापरीक्षा कार्यालय,
अहमदाबाद अंचल

"ऐतिहासिक धरोहर स्थल केवल वास्तुशिल्प सौंदर्य के अवशेष नहीं हैं, बल्कि भावनात्मक दृढ़ता और मानवीय समर्पण के प्रतीक हैं। स्मृति और संवेदना से निर्मित, ऐसे स्मारक उस काल की सभ्यता के उस मनोभाव को दर्शाते हैं जिसने सृजन, त्याग, सौंदर्य और स्नेह सभी को सम्मान दिया। अनेक ऐतिहासिक धरोहरों (जैसे ताजमहल) ने शोक को विरासत में ढालकर स्मृति को कालजयी बनाया है तथा प्रेम में सृजन के पोषित होने की क्षमता को उजागर किया है।"

''ऐतिहासिक धरोहर स्थल केवल वास्तुशिल्प सौंदर्य के अवशेष नहीं हैं, बल्कि भावनात्मक दृढ़ता और मानवीय समर्पण के प्रतीक हैं। स्मृति और संवेदना से निर्मित, ऐसे स्मारक उस काल की सभ्यता के उस मनोभाव को दर्शाते हैं जिसने सृजन, त्याग, सौंदर्य और स्नेह सभी को सम्मान दिया। अनेक ऐतिहासिक धरोहरों (जैसे ताजमहल) ने शोक को विरासत में ढालकर स्मृति को कालजयी बनाया है तथा प्रेम में सृजन के पोषित होने की क्षमता को उजागर किया है।''

गुजरात की भूमि पर, जहाँ सूर्य अपनी तपिश से स्वर्णिम आभा बिखेरता है और हवा में इतिहास की गूंज सुनाई देती है, वहीं स्थित है एक अद्वितीय धरोहर - रानी की बावड़ी (बाव)। यह केवल एक स्थापत्य नहीं, अपितु प्रेम, श्रद्धा और स्मृति की अमर प्रतिमा है। इस बावड़ी के पत्थरों में छिपी है; एक स्त्री की वह पुकार, जो प्रेम की पराकाष्ठा को साक्षात करती है, जो समाज के ताने-बाने में प्रेम, धैर्य और आत्मबल की परिभाषा बदल देती है। यह स्मारक नारी के मौन संघर्ष और उसकी सृजनात्मक चेतना का प्रतीक है।

हर नक्काशी, हर सीढ़ी एक कथा कहती है कि शक्ति को हमेशा शोर की नहीं, स्थिरता की ज़रूरत होती है। यह बाव हमें सिखाती है कि करुणा भी प्रतिरोध का रूप हो सकती है और स्मृति, मुक्ति का एक मार्ग!

यह कहानी है रानी उदयमती की - एक पत्नी, एक रानी, एक श्रद्धालु प्रेमिका की, जिन्होंने अपने प्रिय पति भीमदेव प्रथम की मृत्यु के उपरांत, उनके स्मरण में इतिहास को प्रेम का नया नाम दिया। समय था 11वीं शताब्दी का। गुजरात के अन्हिलवाड़ा (वर्तमान पाटन) पर चालुक्य वंश का शासन था। भीमदेव प्रथम एक प्रजावत्सल, न्यायप्रिय और विद्वान राजा के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे। उनकी शादी चूडासमा राजवंश के राजा खेंगार की पुत्री उदयमती से हुई थी। उनका विवाह केवल एक सामाजिक रस्म न रहकर दो आत्माओं का मिलन बन गया। उदयमती ने न केवल राज्य की रानी का दायित्व संभाला, बल्कि वह भीमदेव की सलाहकार भी बनीं। उदयमती अपने राजा से केवल प्रेम ही नहीं करती थीं, वे उनकी आत्मा की गहराई समझती थीं। वे जानती थीं कि भीमदेव की सबसे बड़ी चिंता पानी की उपलब्धता थी। तभी उन्होंने कई जल स्रोतों, कुओं और बावड़ियों का निर्माण आरंभ करवाया। सम्राट भीमदेव ने मोडेरा के विश्व विख्यात सूर्य मंदिर का भी निर्माण करवाया था। परंतु सुख चिरस्थायी नहीं होता। युद्धों का काल था। मालवा के राजा ने आक्रमण कर दिया। भीमदेव युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए। जब यह समाचार उदयमती तक पहुँचा, तो उनका हृदय टूट गया। वे स्तब्ध रह गईं। पूरे राज्य में शोक की लहर दौड़ गई।

लेकिन उदयमती टूटकर बिखरी नहीं। उन्होंने अपने आँसुओं को एक प्रतिज्ञा में बदल दिया - "मैं तुम्हारी स्मृति को ऐसा अमर रूप दूँगी कि आने वाली शताब्दियाँ तुम्हें याद करेंगी।"

रानी ने स्थापत्य के सर्वश्रेष्ठ शिल्पकारों को बुलाया। स्थान चुना गया - सरस्वती नदी के किनारे। वहाँ उन्होंने बनवानी शुरू की - एक ऐसी बावड़ी, जो केवल जल स्रोत नहीं, बल्कि प्रेम का एक जीता-जागता स्मारक हो। इस बावड़ी में न केवल जल संरक्षण की अद्भुत व्यवस्था थी, बल्कि हर दीवार, हर स्तंभ, हर गहराई में भीमदेव की स्मृति रची गई थी।

27 मीटर गहरी और 63 मीटर लंबी बावड़ी में 500 से अधिक प्रमुख और 1000 से अधिक लघु मूर्तियाँ, शिव, विष्णु, गणेश, देवी-देवताओं की हैं जो रानी के भक्ति भाव को दर्शाती हैं। कहा जाता है कि बावड़ी की सीढ़ियों पर चलते हुए, रानी उदयमती घंटों ध्यानस्थ बैठतीं - मानो पत्थरों से संवाद करती हों, मानो उन्हें यह यकीन हो कि इन दीवारों के बीच भीमदेव का स्वर कहीं न कहीं गूंज रहा है। जब बावड़ी पूरी हुई, तब रानी ने पूरे राज्य को आमंत्रित किया। उस दिन न कोई शोक था, न मौन। वह दिन प्रेम के उत्सव का था। उदयमती ने बावड़ी के अंतिम पायदान पर दीप जलाया और बोलीं - "यह रचना नहीं, यह मेरी आत्मा है। जब तक यह बावड़ी है, मेरा प्रेम जीवित है।"

यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर घोषित यह स्मारक आज भी उसी प्रेम की गवाही देता है। पाषाणों में उकेरे गए भाव, उन मूर्तियों की मुद्राएं, और जल की शांत सरसराहट आज भी रानी उदयमती के प्रेम और उनके संकल्प की गाथा सुनाते हैं।

रानी की बावड़ी महज एक स्थापत्य नहीं है। यह एक प्रेम-पत्र है, जो पत्थर पर लिखा गया है - नष्ट न होने के लिए। यह आत्मा का प्रतिबिंब है, जहाँ गहराई केवल जल की नहीं, बल्कि भावना की भी है। यह स्मारक बताता है कि प्रेम और त्याग समय के पार भी अर्थ पाते हैं। प्रत्येक नक्काशी जीवन की नश्वरता और शाश्वतता के बीच संतुलन का ध्यान कराती है। यहाँ स्त्री केवल निर्माता नहीं, आत्मा की वाहक है, जो अपने अनुभव को पत्थरों में बदलकर शांति का स्वर गूँजाती है। इस बाव की छाया में खड़ा व्यक्ति इतिहास नहीं, स्वयं के भीतर की अनंत यात्रा देखता है। रानी उदयमती ने यह सिद्ध किया कि प्रेम को ना तो मृत्यु मिटा सकती है, ना समय, और ना ही विस्मृति। भारत सरकार ने एक सौ रुपये के नोट पर इस बावड़ी के चित्र को जगह देकर रानी उदयमती के प्रेम और अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर को सम्मान दिया है।

इस आलेख को लिखने में अभिव्यक्ति की आज़ादी, मेरी परिकल्पना, स्थानीय दंत कथाओं तथा ऐतिहासिक साक्ष्यों का संदर्भ लिया गया है।

एक भारत, श्रेष्ठ भारत

आओ चलो तिरंगा लहराएं
मिलकर 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाएं
याद करते हुए अनेक बलिदानों की,
सब मिलकर एक श्रेष्ठ भारत बनाएं।।

हजारों वर्ष पुरानी सभ्यता हमारी
चुनौतियां झेली हमने भारी-भारी
ना हमारा शत्रुत्व किसी से
सभी से निभाई हमने यारी।।

हमारी शक्ति अनेकता में एकता
सच्चा देश गांव-गांव में बसता,
बाधा कोई हमें रोक न पाए,
नई क्षितिजें अब भारत निहारता।।

जैसे फल-फूल जुड़े एक डाली में
धर्म, जाति, भाषा बांटे ना हमें
हो भले ही लाख साजिशें,
राष्ट्र सर्वप्रथम रहे जन-मन में।।

आने वाली सदियां है भारत की
दहाड़ गूंजती युवा पीढ़ी की
है गौरवशाली इतिहास हमारा
गर्व से कहें जय भारत माता की।।

आफ़रीन पिंजार
धारवाड़ शाखा
(हुब्बल्ली-धारवाड़ अंचल)

अंचलों में हिंदी माह 2025 का आयोजन

आगरा

अहमदाबाद

बर्धमान

बारिपदा

भागलपुर

भोपाल

बोकारो

चेन्नई

एर्णाकुलम

गांधीनगर

गया

गोवा

गुवाहाटी

अमृतसर

हजारीबाग

हावड़ा

जोधपुर

कानपुर

केंदुझर

कोलकाता

लुधियाना

मदुरै

धनबाद

नवी मुंबई

पुणे

रायगढ़

राजकोट

संबलपुर

सिलिगुड़ी

सोलापुर

नागपुर

रत्नागिरी

तेलंगाना

सूरत

तिरुवनंतपुरम

वडोदरा

एमडीआई बेलापुर

एसटीसी चेन्नई

एसटीसी नोएडा

एसटीसी कोलकाता

मेरी भारत यात्रा - यादगार पल

नेमु ओनुमा
टोक्यो शाखा

2016 की सर्दियों में, मैं दो दोस्तों के साथ भारत की 10-दिन की यात्रा पर गयी थी। उस समय, मैं एक जापानी बैंक में काम कर रही थी और क्योंकि बैंक ने सिस्टम विकास और रखरखाव के लिए एक कंपनी को भारत में आउटसोर्स किया था, मैं कई भारतीय लोगों के साथ काम कर रही थी, जिनमें से कुछ के साथ मेरी काफी घनिष्ठता हो गयी थी। इसलिए, हमने वहाँ से वापस आए अपने दोस्तों से मिलने के लिए भारत जाने का निर्णय लिया।

हमने दिल्ली, आगरा, वाराणसी, मुंबई और गोवा का दौरा किया। दिल्ली में, मैंने सड़कों पर लेटी हुई कई गायों को देखा। मैं आगरा में ताजमहल की रहस्यमय और अद्भुत सुंदरता से बहुत प्रभावित हुई। मैंने वाराणसी की यात्रा ट्रेन से की। मुंबई अत्याधुनिक शहर है। भारत के विकास में मुंबई की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

इन सभी नए अनुभवों में, जिस स्थान ने मेरे दिल पर सबसे गहरा प्रभाव डाला वह था वाराणसी। गंगा नदी के किनारे, मृतकों के शवों को जलाते हुए लोग, शोक कर रहे रिश्तेदार, प्रार्थना कर रहे लोग, कपड़े धोने वाले लोग, अनुष्ठानिक, स्नान कर रहे लोग, नदी को निहारते हुए बैठे लोग, और हमारे जैसे पर्यटकों की भीड़-

वास्तव में बहुत सारे लोग थे और ऐसा लगा जैसे सब कुछ - जीवन और मृत्यु, दुख और शांति - वहां उपस्थित थे। सोचते हुए कि यह निश्चित रूप से एक बार का अवसर है, मैंने गंगा में स्नान किया। नदी का तल थोड़ा फिसलन भरा था, और पानी मेरी अपेक्षा से गर्म था। मैंने अपनी उँगलियों से लेकर सर तक तीन बार पानी में डुबकी लगाई, और जब मैं बाहर आयी, तो सुबह की धूप चमक रही थी, और मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे अंदर कुछ जन्मा है। कई लोगों ने कहा था वहां स्नान करने से मैं बीमार पड़ सकती हूँ, और शायद यह सच था, लेकिन उसके बाद, वास्तव में मुझे बहुत ऊर्जा महसूस हुई। गंगा का पानी अर्थात् गंगा जल सब कुछ अपने प्रवाह में समेट लेता है और स्वीकार करता है। उस जगह पर होना सामान्य हलचल भरी जिंदगी, कठिनाइयों, और छोटी-छोटी चिंताओं को तुच्छ बना देता है। वाराणसी ने मुझे याद दिलाया कि लोग आखिरकार मर जाते हैं, और मृत्यु के बाद, वे बस तत्व में लौट के आते हैं। हालाँकि, यह एक दु:ख की बात है, परंतु यह प्राकृतिक भी है, और इसी कारण जिंदा रहना कुछ खास है।

उस यात्रा के कई साल बाद, मुझे बैंक ऑफ़ इंडिया, टोक्यो शाखा में काम करने का एक अवसर मिला है। मुझे काम करना और जीना पहले से कहीं ज्यादा पसंद आ रहा है। मुझे विश्वास है कि इसका कारण यह है कि मेरे चारों ओर के लोगों को भी वही बातें पता हैं जो मुझे वाराणसी में समझ में आयीं और वे हर दिन जीने का आनंद लेते हैं। यही कारण है कि मुझे लगता है कि मैं भारत और उसकी संस्कृति से बेहद प्यार करती हूँ।

बुंदेलखंड के वीर योद्धा आल्हा और ऊदल

रमेश चन्द्र
मुख्य प्रबन्धक,
सामान्य परिचालन विभाग,
हरदोई अंचल

"ऐतिहासिक वीर योद्धाओं की अमर गाथाएँ किसी भी राष्ट्र की अनमोल विरासत होती हैं। हिंदी काव्य की वह धारा, जिसे हम लोक-गाथाओं के रूप में जानते हैं, इसी परंपरा का एक सशक्त उदाहरण है। यह काव्य केवल युद्धों का वर्णन नहीं करता, बल्कि साहस, निष्ठा और आत्मसम्मान जैसे शाश्वत मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाता है।"

हमारे देश में अनेकानेक शूरवीरों ने जन्म लिया है, उन्हीं में से दो शूरवीर योद्धाओं आल्हा और ऊदल का नाम अत्यंत सम्मानपूर्वक लिया जाता है। उनका जन्म ग्यारहवीं शताब्दी में वर्तमान के उत्तर प्रदेश के जिला महोबा के दशपुरवा नामक स्थान पर हुआ था। उस समय हमारा देश अनेक छोटी-छोटी रियासतों में बँटा था। इनके पिता का नाम दक्षराज और माता का नाम देवला था। आल्हा और ऊदल के पिता दक्षराज बुंदेलखंड के शासक परमार्दिदेव के सेनापति थे। आल्हा दोनों भाइयों में बड़े थे। जब वे छोटे थे तो माड़ोंगढ़ के राजा ने उनके पिता दक्षराज का सोते समय छलपूर्वक वध कर दिया था। उस समय ऊदल माँ के गर्भ में थे।

कहते है, जब ऊदल का जन्म हुआ तब महोबा में बहुत उत्सव मनाया गया। जब ऊदल 12 वर्ष के हुए तो उनको पता चला कि माड़ोंगढ़ का राजा करिंगाराय उनके पिता का वध करके महोबा की बहुमूल्य संपत्ति लूट कर माड़ोंगढ़ ले गया है, तो ऊदल ने अपनी माँ देवला के समक्ष अपने पिता की मृत्यु का प्रतिशोध लेने की ठान ली। लेकिन माँ तो माँ होती है, उन्होंने ऊदल से कहा अभी तो तुम सिर्फ 12 बरस के हुए हो, थोड़ा और बड़े हो जाओ क्योंकि माड़ोंगढ़ का राजा बहुत ही शक्तिशाली है। बालक ऊदल ने जवाब में जो कहा उससे बुंदेलखंड की गली-गली गुंजायमान है:

"बारह बरस लौ कूकर जीवे और तेरह लो जिये सियार।
बरस अठारह क्षत्री जीवे, आगे जीवन को धिक्कार।"

इन पंक्तियों में क्षत्रीय धर्म और शौर्य पूर्ण जीवन के महत्व को दर्शाते हुए ऊदल कहते है, कुत्ते और गीदड़ जैसे तुच्छ समझे जाने वाले जीव भी बारह-तेरह वर्ष की आयु पाते हैं। जबकि क्षत्रिय केवल अठारह वर्ष तक जीता है। अगर वह इससे ज्यादा जीता है, तो उसके जीवन को धिक्कार कहते है अर्थात् अगर एक योद्धा का जीवन संघर्ष और सम्मान के बिना है तो ऐसा लंबा जीवन किसी काम का नहीं।

माँ देवला समझ चुकी थी कि ऊदल मानने वाला नहीं है। उन्होंने ऊदल से कहा कि पहले जाकर महाराज परमाल से आज्ञा ले आओ। आल्हा और ऊदल दोनों महाराज के पास जाकर माड़ोंगढ़ के साथ युद्ध का प्रस्ताव रखते हैं। पहले तो महाराज दोनों भाइयों

की छोटी उम्र को देखते हुए आज्ञा देने से इंकार कर देते हैं किन्तु दोनों भाइयों के हठ और पिता की मृत्यु का बदला लेने की भावना को देखते हुए उन्हें युद्ध करने की आज्ञा दे देते हैं। दोनों भाई अपनी सेनाओं को तैयार करके युद्ध के लिए कूच करते हैं और चार दिनों की कठिन यात्रा कर माड़ोंगढ़ पहुँच जाते हैं। माड़ोंगढ़ का दुर्ग बहुत ही मजबूत और घने जंगलों के बीच स्थित था, जिसे वहाँ के राजा जम्बेराय ने बनवाया था। इस किले के बारे में बुंदेलखंड में प्रचलित लोकगीत की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं:

"लोहे की ईंट शीश का गारा,
जम्बे दीन्ह किला बनवाए।"

ऐसे मजबूत किले में सेना का प्रवेश मुश्किल प्रतीत होता देख आल्हा ऊदल ने जोगी का वेश बनाया और किले के अंदर दाखिल हो गए। सैनिक अपने राजा को जोगियों के आगमन की सूचना देते हैं। सूचना पाकर राजा जोगियों से उनकी शिक्षा दीक्षा के बारे में पूछता है। इस पर जोगी वेशधारी आल्हा ऊदल अपनी कला कौशल का प्रदर्शन करते हैं। माड़ोंगढ़ का राजा इससे प्रसन्न होकर उन्हें धन देना चाहता है किन्तु जोगी धन दौलत न लेकर किले में भ्रमण करने की इच्छा जताते हैं। इस प्रकार वे दोनों पूरे किले का भौगोलिक अवलोकन कर माड़ोंगढ़ पर चढ़ाई कर देते हैं। दोनों पक्षों के बीच भीषण युद्ध होता है और आल्हा ऊदल जम्बे राय और उसके पुत्र को सेना समेत पराजित कर देते हैं। युद्ध जीतने के पश्चात महोबा में दोनों वीरों का जोरदार स्वागत किया जाता है। इतनी छोटी सी उम्र में दोनों भाईयों द्वारा एक विशाल युद्ध जीतना इस बात को दर्शाता है कि अगर दृढ संकल्प कर लिया जाए तो कोई भी काम असम्भव नहीं है। इस तरह से इन दोनों वीर योद्धाओं ने कुल मिलाकर 52 युद्ध लड़े और प्रत्येक में विजयश्री हासिल की। सन 1182 ई. में महोबा के युद्ध में तत्कालीन हिंदू सम्राट के नाम से विख्यात पृथ्वीराज चौहान से भी इन वीरों ने डटकर मुक़ाबला किया था। आज बुंदेलखंड के जन-जन के कंठ से इन दोनों वीरों के कीर्ति उद्गार अत्यंत गौरवपूर्ण ढंग से गाए जाते हैं।

कभी चौराहे पर जाया करो

ढलती शाम की रंगीनियों का
लुत्फ़ उठाया करो,
वक़्त मुट्ठी से फिसल रहा है
कभी चौराहे पर जाया करो।।

कर्तव्यों के बोझ तले,
न जाने हम कहाँ चले।
चुपचाप गली से जाते हुए
कभी चाँद को निहारा करो।।

माना कि ईएमआई के बढ़ गए हैं जाल,
यूपीआई से भुगतानकर, हो रहे हैं कंगाल।
सबकुछ भुलाकर चबूतरे पर बैठ जाया करो,
हँसी-ठिठोली को मुफ्त में आजमाया करो।।

देखा है कई बार हमने,
सपनों को विदा होते हुए,
बढ़ती उम्र की तन्हाइयों में
पल-पल इन्सानों को खोते हुए
अंजाम सोचे बिना खिलखिलाया करो
कभी अंजान महफिल में घूम आया करो...

देखना दिल तुम्हारा भी बेकरार होगा
जाने अंजाने किसी का इंतजार होगा
फुर्सत के पल पड़ जाएंगे कम
एतबार करो घट जाएंगे हर गम
वक़्त-बेवक्त, वक़्त काट आया करो
थोड़ा तुम हँसो, थोड़ा औरों को भी हँसाया करो...

उत्तम कुमार पुरूषोत्तम
वरीष्ठ प्रबन्धक
अनुपालन विभाग,
पटना आंचलिक कार्यालय

संस्मरण

यादों के झरोखों से - शाखा में मेरा पहला दिन

सत्य पाल सिंह
सहायक महाप्रबंधक
फील्ड महाप्रबंधक कार्यालय
लखनऊ

कुछ ऐसी यादें होती हैं, जो समय के थपेड़ों से धुंधली नहीं पड़तीं। बरसों बीत जाने पर भी वे उतनी ही साफ़, उतनी ही जीवंत बनी रहती हैं। 09 जनवरी 1995 का दिन मेरी स्मृतियों में अभी भी ऐसा ही अंकित है- जिस दिन मैंने बैंक ऑफ़ इंडिया के आंचलिक कार्यालय, रांची में प्रोबेशनरी ऑफिसर के रूप में रिपोर्ट किया था। आदेश मिला और उसी क्षण जाना कि मेरी पहली पोस्टिंग बानो नामक शाखा में हुई है।

उस रात रांची में मुझे नींद तक ठीक से नहीं आई। मन में कौतूहल था, उत्साह था, मगर कहीं न कहीं एक हल्की चिंता भी थी कि कैसा होगा वह इलाका, कैसी होगी शाखा और कैसे होंगे वहां के लोग। अगली सुबह मैं रांची बस अड्डे पहुँचा। रांची से बानो की दूरी सौ किलोमीटर थी। कंडक्टर ने बताया कि पांच घंटे लग जाएंगे। बस जैसे ही चली, वह मानो हिचकोले खाती नाव बन गई। सड़क इतनी टूटी-फूटी और गड्ढों से भरी थी कि सौ किमी की यात्रा पांच घंटे में हो जाएगी, यह भी एक गनीमत थी। यह कहना मुश्किल था कि सड़क में गड्ढे थे या गड्ढों में सड़क थी।

यात्रियों के चेहरों पर हिचकोले खाती बस के सफर की थकान सामान्य लग रही थी, जैसे वे इसके आदी हों। बगल की सीट पर बैठे एक बुज़ुर्ग ने मुस्कुराकर पूछा- "कहाँ जा रहे हैं?" मैंने जवाब दिया- "बानो।" वे सहज ही बोले- "अच्छी जगह है, लोग भोले-भाले हैं। शुरू में अजनबी लगेगा, लेकिन बाद में अपनापन लगेगा।" रास्ते में जंगल, पहाड़ और मिट्टी की सौंधी खुशबू थी। कहीं झोपड़ियों से उठता धुआँ, कहीं खेतों में काम करते लोग। हर मोड़ पर प्रकृति का नया रूप सामने आता। थकान के बावजूद उस यात्रा में कुछ अनकहा आकर्षण था। पाँच घंटे बाद दोपहर करीब एक बजे मैं बानो पहुँचा।

बानो झारखंड का एक बड़ा गाँव था-आदिवासी बाहुल्य, लेकिन बेहद सरल और आत्मीय। बिजली अब तक नहीं पहुँची थी। छोटा-सा बाज़ार, एक पोस्ट ऑफिस, सरकारी अस्पताल, ज़िला कोऑपरेटिव बैंक और बैंक ऑफ़ इंडिया की शाखा ही वहाँ के मुख्य केंद्र थे। हफ़्ते में लगने वाले हाट में मुर्गों की लड़ाई लोगों का बड़ा शौक़ था। लोगों के चेहरे पर उत्सुकता थी कि यह नया अधिकारी कैसा है।

शाखा पहली मंज़िल पर थी और पीछे मैनेजर का आवास। मेरे रहने का प्रबंध वहीं एक कमरे में किया गया था। यात्रा से थका-हारा जब मैं शाखा में पहुँचा तो मैनेजर साहब और कर्मचारियों ने आत्मीय मुस्कान से मेरा स्वागत किया। पहली झिझक कुछ ही पलों में चली गई। परिचय हुआ, चाय, जलपान के बाद कुछ औपचारिकताएं पूरी हुई और मैं ग्राहकोन्मुख हुआ - सादे कपड़ों में किसान, छोटे दुकानदार, कुछ महिलाएँ। उनके चेहरे पर संकोच भी था और अपनापन भी। एक बुज़ुर्ग किसान ने हाथ जोड़ते हुए कहा- "नए आए हो, अब आप आ गए हैं तो बैंक और अच्छा चलेगा।" उनके स्वर में जो विश्वास था, उसने मेरे भीतर गहरी ज़िम्मेदारी जगा दी।

शाम में मैंने बाहर एक जगह देखी तो एक आदमी पेड़ पर चढ़कर कौए के घोंसले से बच्चे निकाल रहा था। पूछने पर हँसते हुए किसी ने कहा- "इनकी सब्ज़ी बनेगी।" मेरे लिए यह बड़ा विचित्र था, पर गाँव के जीवन की सच्चाई थी। शाम ढलते ही मुझे चेतावनी मिली- "यहाँ साँप बहुत निकलते हैं, रात को टॉर्च लेकर ही निकलना।" यह सुनकर मन सिहर उठा। शाम में दो किलोमीटर पैदल चलकर मैं बानो रेलवे स्टेशन देखने पहुँचा। वहाँ का सन्नाटा और दूर कहीं ट्रेन की सीटी एक अलग ही अनुभव था। प्लेटफार्म पर कुछ बच्चे खेल रहे थे, कुछ लोग बोरे पर बैठे बातें कर रहे थे। स्टेशन मास्टर से थोड़ी देर बातचीत हुई। वे बोले- "साहब, यहाँ रातें बहुत शांत होती हैं। आपको धीरे-धीरे आदत हो जाएगी।" उनकी मुस्कान में अपनापन था।

वहीं स्टेशन के पास जौनपुर, उत्तर प्रदेश के रहने वाले तिवारी जी से परिचय हुआ, जो बानो में स्टेशन के पास ही अपनी ससुराल में रहते थे। उन्होंने मुझे अपने घर बुला लिया। उनके परिवार ने जिस आत्मीयता से मुझे भोजन कराया, वह पल आज भी मेरे दिल को गरमाहट देता है। उनके घर के सामने एक छोटा-सा अकेला पहाड़ था। भोजन करने के बाद मैं अचानक रोमांच में पहाड़ पर चढ़ गया। ऊपर से जब गाँव को देखा तो टिमटिमाती लालटेनें, छोटे-छोटे घर और दूर तक फैली नीरवता किसी जादुई दृश्य जैसे लग रहे थे। लगा कि अब बानो मेरे लिए अजनबी नहीं रहा।

धीरे-धीरे वहाँ का जीवन खुलने लगा। शाखा में बिजली नहीं थी, सब काम हाथ से करना पड़ता था। रजिस्टरों के पन्नों पर पसीना और मेहनत झलकती थी। लेकिन उसी में ग्राहकों की आँखों में भरोसा और संतोष देखने को मिलता। कभी-कभी ग्राहक खेत से सीधे बैंक आ जाते, मिट्टी लगे हाथों से पासबुक आगे बढ़ाते। कोई हस्ताक्षर नहीं कर पाता तो अंगूठा लगाता। एक दिन एक बुज़ुर्ग महिला आई, बोली- "बाबू, मेरे बेटे ने शहर से पैसा भेजा है, ज़रा बता दीजिए आया है या नहीं।" जब मैंने पेमेंट पास करते हुए उसे नोट थमाए, उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसने सिर झुकाकर मेरे हाथ छुए। उस क्षण समझ आया कि बैंकिंग केवल लेन-देन नहीं है, यह भरोसे और भावनाओं का रिश्ता है।

गाँव के लोग सरल थे। एक दिन शाखा में भीड़ लगी थी, तभी एक आदिवासी युवक आया,बोला- "साहब, मेरे पास ज़्यादा कुछ नहीं है, पर जो है, बैंक में रखना चाहता हूँ। चोरी का डर लगता है।" उसने पोटली खोली तो उसमें कुछ सिक्के और थोड़े-से नोट थे। उसकी मासूमियत देख मैं अभिभूत हो गया। उसके लिए यह धन कितना कीमती था, इसे वह पूरी श्रद्धा के साथ बैंक को सौंप रहा था।

बानो में समय धीमे-धीमे चलता था। शाम ढलते ही चारों ओर अँधेरा और फिर दूर-दूर तक टिमटिमाती लालटेनें। कभी रात को टॉर्च लेकर बाहर निकलता तो हवा में एक अजीब-सी ताजगी और मिट्टी की महक महसूस होती। पेड़ों की सरसराहट और दूर किसी कुत्ते के भौंकने की आवाज़ें आती। शहर की हलचल से बिलकुल विपरीत यह दुनिया थी।

शहरों की चकाचौंध में बैंकिंग कभी-कभी केवल आंकड़े और बैलेंस शीट तक सिमट जाती है, पर बानो की मिट्टी ने मुझे सिखाया कि असली बैंकिंग ग्राहकों की धड़कनों को समझने और उनके सुख-दु:ख में सहभागी बनने का नाम है। ग्रामीण ग्राहकों की सेवा करना सिर्फ कर्तव्य नहीं था, बल्कि आत्मिक सुख देने वाला अनुभव था। उनकी आँखों में भरोसा देखना, उनकी उम्मीदों को पूरा करना- वही मेरे लिए उस दौर की सबसे बड़ी पूँजी थी।

आज इतने वर्षों बाद भी जब यादों के झरोखे खोलता हूँ तो बानो की मिट्टी की सौंधी खुशबू अब भी मन में उतर आती है। आसपास के जंगलों से बहती छोटी-छोटी नदियां, पहाड़, जंगल, अब भी अपनी उसी श्रव्यता-दृश्यता के साथ उभर आते हैं। वह पहला दिन, वह यात्रा, वह शाखा, वे ग्राहक-सब मिलकर मेरे जीवन की अमिट धरोहर बन गए हैं। बानो शाखा केवल एक पोस्टिंग नहीं थी, बल्कि वह जीवन की पाठशाला थी, जिसने मुझे सिखाया कि सच्ची बैंकिंग सिर्फ लेन-देन नहीं, बल्कि विश्वास और संवेदनशीलता की डोर से ग्राहकों के साथ जुड़ना है।

विजयी होना निश्चित है...

जब राह मुश्किल लगती है...
जब मंजिल कोसों दूर दिखती है...
जब मन शंका से भर जाता है...
फिर भी जो अविरत चलता है...
उसका विजयी होना निश्चित है...

जब एकांत में हौसला खोखला लगता है...
जब आत्मविश्वास ढकोसला लगता है...
जब जीवन उध्वस्त हुआ घोंसला लगता है...
फिर भी जो लक्ष्य की ओर उड़ान भरता है...
उसका विजयी होना निश्चित है...

जब हर प्रयास नाकाम लगता है...
जब हुनर किस्मत का गुलाम लगता है...
जब मन-मस्तिष्क में संग्राम सुलगता है...
फिर भी जो रण में डटा रहता है...
उसका विजयी होना निश्चित है...

पल्लवी कंदले
वरिष्ठ प्रबंधक
कृषि वित्त विभाग
अहमदाबाद अंचल

वे भी क्या दिन थे...

हेना परवेज़
अधिकारी
बोकारो थर्मल पावर स्टेशन शाखा
बोकारो अंचल

बारिश के कारण आज शाखा में कुछ कम ग्राहकों की उपस्थिति थी। इस मौके का फायदा उठाते हुए पैसा निकालने आए लगभग 80 वर्ष के एक दादाजी से थोड़ी-सी बातचीत करने का अवसर मिला। तबीयत खैरियत पूछना था कि दादाजी शुरू हो गए, अपने किस्सों के पिटारे को खोल मुझे सुनाने लगे। मैं गौर कर रही थी कि उनके चेहरे पर अलग ही चमक दिखने लगी। इसी बीच भीड़ के बढ़ने के साथ मेरी भी व्यस्तता बढ़ गई। दिनभर की व्यस्तता के बाद जब घर लौटी तो बस सोफे को ही बिस्तर समझ लेट गई और मैंने टीवी का रिमोट उठाया कि कोई मनोरंजक कार्यक्रम देखते है, जिससे कि दिनभर की मानसिक और शारीरिक थकान दोनों ही दूर हो जाए। तभी मेरा ख्याल आज सुबह के दादाजी की बातों पर जा रुका। कहानी की शुरुआत उन दिनों में हुई जब दादाजी अपने बचपन में थे। दादा जी ने बताया...

वह ऐसा समय था जब मनोरंजन का एकमात्र साधन 'दूरदर्शन' हुआ करता था। 15 सितंबर 1959 को दूरदर्शन की शुरुआत हुई और तब उसका प्रसारण केवल कुछ घंटे के लिए महानगरों में हुआ करता था। दूरदर्शन धीरे-धीरे मनोरंजन, सूचना और ज्ञान तीनों का प्रमुख माध्यम बनने लगा जिससे इसकी लोकप्रियता भी व्यापक होने लगी। 1980 से 1995 के दौर में दूरदर्शन ने अनेक ऐतिहासिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिनका प्रभाव गहरा और दीर्घकालिक रहा।

रामानंद सागर द्वारा निर्मित 'रामायण' न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी ऐतिहासिक रही। लोगों के मन में श्रद्धा को जगा 'रामायण' का ज्ञान इस कदर इस धारावाहिक ने जगाया कि इसके प्रसारण के समय सड़कों पर सन्नाटा छा जाया करता था और सभी लोग श्रद्धा से टीवी के सामने बैठ जाते थे। बी आर चोपड़ा द्वारा निर्मित 'महाभारत' ने धार्मिक ग्रंथ को आधुनिक रूप में जीवित किया था। इसने भारतीय संस्कृति के आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया। 'बुनियाद' नामक धारावाहिक में विभाजन की त्रासदी और उससे जुड़ी पारिवारिक पीड़ाओं को सजीव रूप में प्रस्तुत किया। माँ-पिताजी हंसते खिलखिलाते हुए बताते हैं कि हमें तो बुधवार और शुक्रवार का इंतजार पूरे सप्ताह रहता था क्योंकि उस दिन प्रसारित होने वाला कार्यक्रम 'चित्रहार' हिंदी फिल्मी गीतों से सबके दिलों पर राज करता था। वही 'मालगुडी डेज' आर. के. नारायण की कहानियों पर आधारित भारतीय समाज की सरलता और संवेदनशीलता को दर्शाता धारावाहिक था। इन्हीं सबके बीच बच्चों का चहिता 'शक्तिमान' भी दिलों में सुपर हीरो की जगह बनाने में सफल रहा।

दूरदर्शन केवल मनोरंजन का साधन नहीं था बल्कि यह समाज को शिक्षित करने और एक सूत्र में बाँधने का भी माध्यम बना। दूरदर्शन ने भारत की विभिन्न भाषाओं और समुदायों को एक मंच पर खड़ा किया। 'रामायण' और 'महाभारत' जैसे कार्यक्रमों ने धार्मिक एकता को बल दिया। वहीं 'हमलोग' और 'बुनियाद' जैसे सीरियल सामाजिक समानता व पारिवारिक मूल्यों को प्रोत्साहित करने में सफल हुए। "कृषि दर्शन" जैसे कार्यक्रमों ने किसानों को नई तकनीक में शिक्षित किया तो रंगोली जैसे कार्यक्रम लोकगीत, शास्त्रीय संगीत, नृत्य और नाट्य कला को जन-जन तक पहुंचाने का माध्यम बने।

माँ की वो हंसी भुलाये नहीं भूलती और वो कभी भी बताते हुए

नहीं थकती थी कि कैसे एंटीना को छत पर लगाने, सिग्नल पकड़ाने के लिए कई बार ऊपर नीचे करना पड़ता था लेकिन फिर भी दर्शकों में उत्साह की कमी कभी नहीं हुआ करती थी। भले ही आज की तरह की एचडी क्वालिटी फोटो ना दिखती हो पर दूरदर्शन का दौर एक ऐसा सामाजिक अनुभव था जो रिश्तों को और गहरा व मजबूत बनाता था।

1990 के दशक में निजी चैनलों जैसे ज़ी टीवी, स्टार प्लस, सोनी एंटरटेनमेंट आदि का आगमन दूरदर्शन की लोकप्रियता को धूमिल करने लगा। इन चैनलों के चमक-दमक, ग्लैमर और विविधता ने दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया। भले ही दूरदर्शन का स्वर्णिम युग समाप्त हो चुका है पर इसका ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व आज भी बना हुआ है। दूरदर्शन ने हमें जीवन की बहुमूल्य सीख दी है, जो आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रही हैं जैसे कि 'सादगी में छुपी सुंदरता', 'मनोरंजन केवल हंसी-रोमांच का माध्यम नहीं बल्कि शिक्षण और प्रेरणा का भी स्रोत है'।

दूरदर्शन का दौर भारतीय समाज के लिए केवल मनोरंजन का युग नहीं था बल्कि पारिवारिक मूल्य एवं नैतिकता का भी स्रोत था। उसने पीढ़ियों को जोड़ने तथा नई सोच और भारतीय समाज में विकास की अहम भूमिका निभाई है। आज भले तकनीक ने हमें हर उस साधन से नवाजा है जिसकी कभी हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे परंतु वह अपनापन, वह साथ बैठ हंसना - खिलखिलाना जो दूरदर्शन के दौर में पनपी, वह आज भी लोगों की यादों में जीवंत है। दूरदर्शन का दौर, वह दौर था जिसने हमें सिखाया कि मनोरंजन तभी सार्थक है जब उसमें शिक्षा, संस्कृति और मानवता की गंध हो। मेरा मस्तिष्क भी अब मुझसे सवाल करने लगा कि वह भी क्या सुनहरा दौर था और इन्हीं यादों के साथ एकाएक मेरी आँख खुल गई और वास्तविकता में लौट आते ही मैंने खुद को सोफे की जगह फर्श पर पड़ा हुआ पाया। दूरदर्शन की याद ने मुझे ख्यालों के उस रोलर कोस्टर से गुजारा कि मेरी दिनभर की थकान चुटकी में गायब-सी हो गई और मैं सोचने लगी वह भी क्या दिन थे, काश हम भी उसे जी पाते।

हे प्रिय! आप नाराज क्यों हैं?

हे प्रिय! आप नाराज क्यों हैं?

समंदर के शांत जल के भीतर

रण का आगाज क्यों है...

भूत को छोड़िए

भविष्य की चिंता में,

व्यर्थ, आज क्यों है...

हे प्रिय! आप नाराज क्यों हैं?

कभी थिरकते थे मीरा के पांव

मृदंग और ढोल की ताल पर

आज धूल धूसरित साज क्यों है...

हे प्रिय! आप नाराज क्यों हैं?

पीपल की सरसराती पत्तियों से

कभी बहती थी शीतलता

आज ग्रीष्म का आगाज क्यों है...

हे प्रिय! आप नाराज क्यों हैं?

विजय पासवान
मुख्य प्रबंधक
ऋण निगरानी विभाग
मुजफ्फरपुर अंचल

केरल का स्वर्ग - वायनाड

अभिषेक कुमार
प्रबंधक,
राजभाषा
विदर्भ अंचल

वायनाड भारत के दक्षिणी राज्य केरल में स्थित एक प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण जनपद का नाम है। 'वायनाड' नाम दो मलयालम शब्दों - 'वायल' और 'नाडु' से मिलकर बना एक नाम है जिसका अर्थ 'धान के खेतों की भूमि' है। धान के विस्तृत खेतों के कारण इस क्षेत्र को प्राचीन समय में 'वायल नाडु' कहा जाता था, जो कालांतर में 'वायनाड' नाम में बदल गया। बारहमासी नदियों के साथ अनुकूल जलवायु परिस्थितियाँ यह सुनिश्चित करती हैं कि यहाँ की भूमि पूरे वर्ष उपजाऊ बनी रहती है। चावल, चाय, कॉफी, अदरक, सुपारी आदि की खेती यहाँ बहुतायत में की जाती हैं।

भौगोलिक दृष्टि से वायनाड केरल के पूर्वी भाग में स्थित है और यह एकमात्र ऐसा जनपद है जिसकी सीमाएं कर्नाटक और तमिलनाडु दोनों राज्यों से मिलती हैं। कर्नाटक का शहर मैसूर और तमिलनाडु का लोकप्रिय हिल स्टेशन ऊटी वायनाड के निकट होने के कारण इन दोनों राज्यों से अधिक संख्या में पर्यटक अपने परिजनों एवं मित्रों के साथ यहाँ घूमने के लिए आते हैं। यह क्षेत्र पूरी तरह से हरे-भरे जंगलों से घिरा हुआ है और वन्यजीव संरक्षण हेतु आरक्षित है। इसी कारण यहाँ रेल मार्ग का निर्माण अत्यंत कठिन है। वायनाड तक पहुँचने के लिए सड़क के रास्ते से ही आना पड़ता है। वायनाड से निकटतम रेलवे स्टेशन कोषिक्कोड में स्थित है जो यहाँ से 110 किलोमीटर दूर है।

पश्चिमी भाग की केरल की समुद्री सीमा भले ही विस्तृत हो, किंतु राज्य के पूर्वी छोर पर स्थित होने के कारण वायनाड जनपद में समुद्री तट नहीं है। यहाँ अनेक खूबसूरत एवं दर्शनीय स्थल पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, उनमें से कुछ महत्वपूर्ण स्थलों का विवरण निम्नलिखित हैं :-

- **वायनाड वन्यजीव अभयारण्य**

'वायनाड वन्यजीव अभयारण्य' वायनाड जनपद के मुथंगा क्षेत्र में स्थित है। इसकी स्थापना वर्ष 1973 में की गई थी। लगभग 345 वर्ग किलोमीटर में फैला यह अभयारण्य केरल के सबसे समृद्ध वन्यजीव क्षेत्रों में से एक माना जाता है। यहाँ हाथी, बाघ, शेर, तेंदुआ, जंगली बिल्ली, बंदर एवं विभिन्न प्रजाति के सांप के साथ-साथ मोर, कोयल, उल्लू, कठफोड़वा जैसे विभिन्न प्रकार के जीव जंतु, पक्षी एवं उनकी विभिन्न प्रजातियां बड़ी संख्या में पाई जाती हैं।

- **एडक्कल की गुफाएं**

'एडक्कल की गुफाएं' वायनाड जनपद के एडक्कल क्षेत्र में स्थित दो प्राकृतिक गुफाएं हैं। ये गुफाएँ कलपेट्टा से लगभग 25 किलोमीटर दूर पश्चिमी घाट में समुद्र तल से लगभग 1,200 मीटर (3,900 फीट) की ऊँचाई पर अम्बुकुत्ति मला में स्थित हैं। यह स्थान मैसूर के ऊँचे पहाड़ों को मालाबार तट से जोड़ने वाले प्राचीन व्यापार मार्ग के निकट है। ये गुफाएं दो क़ुदरती चट्टानी संरचनाओं से बनी हैं जिनके बारे में ऐसी मान्यता है कि एक विशाल चट्टान में दरार पड़ने से ये गुफाएं निर्मित हुईं। गुफाओं के भीतर नवपाषाण युगीन मानवों द्वारा बनाये गये भित्तिचित्र पाए जाते हैं, जिन्हें कम से कम 6,000 ईसा पूर्व का माना जाता है। यह प्रागैतिहासिक मानव सभ्यता या

बस्ती का जीवंत संकेत की ओर इशारा करती है। एडक्कल के ये पाषाणयुगीन भित्तिचित्र अत्यंत दुर्लभ हैं तथा दक्षिण भारत में अब तक ज्ञात एकमात्र उदाहरण हैं।

- **बाणासुर सागर बांध**

वायनाड जनपद में बाणासुर पहाड़ियों की गोद में स्थित बाणासुर सागर बांध एक अत्यंत सुंदर बांध है। यह बांध भारत का सबसे बड़ा मिट्टी का बांध माना जाता है तथा एशिया का दूसरा सबसे बड़ा मिट्टी का बांध है। बांध के ऊपर दिखाई देने वाला विशाल जलाशय का दृश्य बेहद शानदार लगता है। यहाँ आप स्पीड बोटिंग, ट्रेकिंग जैसी रोमांचक गतिविधियों का आनंद ले सकते हैं। पहाड़ियों की चोटी से जब नीचे फैली बाणासुर झील का दृश्य अत्यंत मंत्रमुग्ध कर देने वाला अनुभव प्रदान करता है।

- **लक्किडि व्यू पॉइंट**

'लक्किडि व्यू पॉइंट' वायनाड का एक अत्यंत लोकप्रिय पिकनिक एवं दर्शनीय स्थल है, वैत्तिरि से केवल 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहाँ से घाटी और घाट रोड का बहुत ही सुंदर दृश्य दिखाई देता है। कभी-कभी लक्किडि व्यू पॉइंट के पास की सड़कों पर कोहरे की चादर बिछ जाती है। लेकिन कभी-कभी दृश्य लंबा और साफ़ भी दिखाई देता है। लक्किडि स्वयं एक छोटा-सा नगर है, जो केरल के कोषिक्कोड से लगभग 58 किलोमीटर उत्तर-पूर्व की दिशा में स्थित है। लक्किडि व्यू पॉइंट इस नगर से मात्र 5 किलोमीटर की दूरी पर है।

- **900 कंडी, ग्लास ब्रिज**

केरल के वायनाड जनपद में 900 कंडी पर पूरी तरह से कांच से बना हुआ यह ग्लास ब्रिज केरल की सुंदरता में चार चाँद लगा देता है। यह दक्षिण भारत का पहला ग्लास ब्रिज है जिसे एक निजी कंपनी द्वारा बनाया गया है। यह पुल लगभग 100 फीट ऊँचाई पर स्थित है। चारों ओर से सुंदर पहाड़ियों से घिरा हुआ यह स्थल पर्यटकों को एक शानदार अनुभव प्रदान करता है। इस ब्रिज पर किसी भी प्रकार की बत्ती जलाने की सुविधा उपलब्ध नहीं है। इसलिए सुरक्षा कारणों से यहाँ सूर्यास्त के बाद पर्यटकों को प्रवेश की अनुमति नहीं होती।

- **चेम्ब्रा पीक**

वायनाड की सबसे बड़ी चोटी चेम्ब्रा पीक समुद्र तल से लगभग 2100 मीटर की ऊंचाई पर वायनाड के दक्षिणी हिस्से में मेप्पाडी के समीप स्थित है। इसकी चढ़ाई चुनौतीपूर्ण होते हुए भी अत्यंत रोमांचक अनुभव है। यहाँ ट्रेकिंग के हर चरण में वायनाड की हरियाली, प्रकृति की विशालता अधिक स्पष्ट दिखाई देती है। इस चोटी तक पहुंचकर लौटने में सामान्यत: एक दिन का समय लगता है। जो पर्यटक यहाँ कैंपिंग करना चाहते हैं, उनके लिए

यह एक अविस्मरणीय अनुभव बन जाता है। कैंपिंग की अनुमति और आवश्यक सुविधाओं के लिए पर्यटक वायनाड के कलपेट्टा स्थित डिस्ट्रिक्ट टूरिज़्म प्रोमोशन काउंसिल (डीटीपीसी) से संपर्क कर सकते हैं।

- **सीता देवी मंदिर**

सीता देवी मंदिर वायनाड के प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। यह मंदिर पुलपल्ली नामक स्थान पर स्थित है, जो सुल्तान बत्तेरी से लगभग 24 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस मंदिर की सबसे विशेष बात यह है कि यह केरल राज्य का एकमात्र ऐसा मंदिर है जहां देवी सीता, लव और कुश की पूजा एक साथ की जाती है। इस मंदिर की मुख्य देवी माता सीता हैं। इस मंदिर का संबंध रामायण काल से माना जाता है। मैसूर की ओर से केरल में प्रवेश करने वाले पर्यटकों के लिए यह मंदिर वायनाड का सबसे पहला दर्शनीय स्थल है, जिसे वायनाड जनपद का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है।

वायनाड अपनी प्राकृतिक सुंदरता, समृद्धि और मौसम के कारण यात्रियों के लिए अद्वितीय अनुभव प्रदान करता है। हरे-भरे पर्वत, प्राचीन गुफाएं और पवित्र मंदिर जैसी अनमोल प्राकृतिक संपत्तियों का सम्मिलन इस स्थान को केरल का स्वर्ग बना देता है। यात्रा केवल स्थान परिवर्तन नहीं; बल्कि दृष्टिकोण परिवर्तन भी होती है। वायनाड की यात्रा दृष्टिकोण परिवर्तन के साथ आत्मिक शांति आत्मसात करने का अविस्मरणीय अनुभव है।

साइबर स्वच्छता : डिजिटल सुरक्षा की नींव

के गुण्णलक्ष्मी
लिपिक
मदुरै अंचल

आज के डिजिटल युग में साइबर स्वच्छता (Cyber Hygiene) हमारी ऑनलाइन सुरक्षा का मूल आधार है। जैसे शारीरिक स्वास्थ्य हेतु नियमित सफाई या स्वच्छता आवश्यक होती है, वैसे ही सुरक्षित इंटरनेट उपयोग के लिए सावधानीपूर्वक डिजिटल व्यवहार अनिवार्य है। अगर हम अपने डिजिटल स्वास्थ्य को बनाए रख सकते हैं तो साइबर हमलों के जोखिम को काफी हद तक कम कर सकते हैं।

साइबर स्वच्छता केंद्र को डिजिटल इंडिया पहल के एक भाग के रूप में भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा 21 फरवरी 2017 को प्रारंभ किया गया था। यह केंद्र भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम (CERT-In) द्वारा संचालित है। इसका मूल उद्देश्य नागरिकों को बॉटनेट और मैलवेयर संक्रमण से अपने कंप्यूटर एवं मोबाइल उपकरणों की पहचान करने, उन्हें स्वच्छ एवं सुरक्षित रखने के लिए एक मंच प्रदान करना है, जिससे एक सुरक्षित साइबर स्पेस का निर्माण हो सके। अच्छी साइबर स्वच्छता में मजबूत पासवर्ड का उपयोग, नियमित सॉफ्टवेयर अपडेट, डेटा बैकअप, एसेट इन्वेंट्री बनाए रखना तथा सिस्टम के स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने हेतु न्यूनतम विशेषाधिकार (least privilege) जैसी सुरक्षा नीतियों का पालन करना शामिल है। साइबर स्वच्छता मूलत: किसी संगठन में साइबर सुरक्षा के लिए एक संरचित दृष्टिकोण है, यद्यपि यह औपचारिक साइबर सुरक्षा ढांचे की तुलना में अधिक व्यावहारिक है।

संदर्भ और उद्देश्य :-

यह मानक नियामक प्रथाओं का पालन करके संगठन को सुरक्षा खतरों से आगे रखता है। इसमें नियामक दिशा-निर्देशों के अनुरूप कमजोरियों और विसंगतियों की पहचान के लिए संगठन के बुनियादी ढांचे को स्कैन करना शामिल है। इससे यह सुनिश्चित किया जाता है कि संगठन डेटा को सुरक्षित रूप से संभाले, जिससे कानूनी जोखिमों की संभावना कम हो सके।

साइबर स्वच्छता का मुख्य उद्देश्य संवेदनशील डेटा की सुरक्षा करना तथा किसी भी साइबर हमले की स्थिति में शीघ्र पुनर्प्राप्ति (recovery) की क्षमता को मजबूत बनाना है। यह अवधारणा इस प्रकार कार्य करती है कि जिस प्रकार व्यक्ति संक्रमण से बचाव के लिए अपने शारीरिक स्वास्थ्य हेतु नियमित स्वच्छता बनाए रखते हैं, ठीक उसी प्रकार संगठन भी नियमित साइबर स्वच्छता उपाय अपनाकर डेटा उल्लंघनों और अन्य सुरक्षा घटनाओं से बचाव कर सकते हैं।

साइबर स्वच्छता एक साझा जिम्मेदारी है :-

साइबर स्वच्छता केवल आईटी या साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह सभी विभागों और कर्मचारियों की साझा जिम्मेदारी है। हर कर्मचारी निम्नलिखित उपाय अपनाकर उचित साइबर स्वच्छता बनाए रख सकता है और इससे व्यावसायिक जोखिम को कम कर सकता है:

- **संदिग्ध ईमेल :** संदिग्ध ईमेल अटैचमेंट या लिंक पर क्लिक करने से सावधान रहना।
- **वाई-फाई का उपयोग :** सार्वजनिक या अविश्वसनीय वाई-फाई नेटवर्क का उपयोग न करना।
- **पासवर्ड प्रबंधन :** मजबूत और जटिल पासवर्ड का उपयोग करना और उन्हें नियमित रूप से बदलना।

साइबर स्वच्छता के लाभ :-

अच्छी साइबर स्वच्छता अपनाने से संगठन अपनी सुरक्षा स्थिति (security posture) में सुधार कर सकता है, परिचालन रुकावटें, डेटा समझौते और डेटा हानि के जोखिम को कम कर सकता है। यह संगठन के साइबर सुरक्षा ढांचे को सुदृढ़ बनाता है, जिससे वह

वर्तमान और उभरते साइबर खतरों का प्रभावी ढंग से सामना कर सके। मूलभूत साइबर स्वच्छता उपाय अपनाना साइबर सुरक्षा और लचीलेपन (resilience) की दिशा में एक लंबा कदम है।

साइबर स्वच्छता की 7 सर्वोत्तम प्रथाएं :-

1. **मजबूत प्रमाणीकरण** - मजबूत और जटिल पासवर्ड का उपयोग करें, और जहाँ संभव हो दो-कारक प्रमाणीकरण (2FA) सक्षम करें।
2. **सोफ्टवेयर अपडेट** - अपने ऑपरेटिंग सिस्टम, ब्राउज़र और अन्य सॉफ्टवेयर को हैकर्स के लिए प्रवेश द्वार बंद करने हेतु नियमित रूप से अपडेट करते रहें।
3. **संदिग्ध लिंक्स** - ईमेल, सोशल मीडिया या संदेशों में संदिग्ध लिंक और अटैचमेंट से सावधान रहें, तथा अविश्वसनीय स्रोतों से फाइलें डाउनलोड न करें।
4. **सार्वजनिक नेटवर्क का जोखिम** - संवेदनशील लेनदेन के लिए सार्वजनिक वाई-फाई नेटवर्क का उपयोग न करें; यदि आवश्यक हो तो वीपीएन (VPN) का प्रयोग करें।
5. **गोपनीयता सेटिंग्स** - अपनी व्यक्तिगत जानकारी को सुरक्षित रखने के लिए सोशल मीडिया प्रोफाइल पर मजबूत गोपनीयता सेटिंग्स लागू करें।
6. **डेटा बैकअप** - सुरक्षा घटना की स्थिति में डेटा हानि से बचने के लिए महत्वपूर्ण फाइलों का नियमित ऑफलाइन बैकअप रखें।
7. **रिपोर्टिंग** - किसी भी साइबर अपराध या संदिग्ध गतिविधि की रिपोर्ट तुरंत राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल या टोल-फ्री नंबर 1930 पर करें।

अंतत: यह स्पष्ट है कि आज के डिजिटल युग में साइबर स्वच्छता केवल एक तकनीकी आवश्यकता नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व और सतर्कता की संस्कृति है। सतर्क रहने और इन प्रथाओं को दैनिक आदत बनाना ही लगातार बढ़ते जा रहे साइबर खतरों के बीच सुरक्षित रूप से सफल होने का एकमात्र तरीका है।

सतर्क रहें, सुरक्षित रहें!

(Stay Alert, Stay Safe!)

चित्र काव्य प्रतियोगिता -6

प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए इस चित्र के भावों को व्यक्त करने वाली कविता, अधिकतम 50 शब्दों में लिखें और हमें BOI.Vaarta@bankofindia.co.in पर ईमेल द्वारा भेजें। सर्वश्रेष्ठ 04 कविताओं के रचयिताओं का फोटो, कविता के साथ अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार राशि रु. 1000/- है। इस प्रतियोगिता में केवल बैंक ऑफ इंडिया के स्टाफ सदस्य ही भाग ले सकते हैं। कृपया नोट करें कि 50 से अधिक शब्द होने पर प्रविष्टि को पुरस्कार हेतु पात्र नहीं माना जाएगा।

चित्र काव्य प्रतियोगिता - 5 के विजेता

कुम्हार

मिट्टी को जो दे रंग-आकार,
ऐसा मूर्तिकार।
मूरत में जो प्राण भरे,
वो है कुम्हार!!
निर्गुण को सगुण बनाये,
है ये शिल्पकार।
कर्म ही है उसका ईश्वर,
ऐसा वो कलाकार!!
हाथ ही है उसका औज़ार,
लकड़ी को बनाए कर्मधार।
सबको मोहित करने वाला,
ऐसा स्वरूप करे तैयार।

गोरोबा संभाजी कानगुले
प्रबंधक,
आयोजना विभाग,
सोलापुर अंचल

आकृति

मैं मिट्टी था बिखरा-बिखरा, रूप-रंग से था अनजान,
कुछ समझ न आता था, क्या है मेरी पहचान।

तभी किसी ने छुआ मुझे, बड़े ही प्यार-स्नेह से,
कभी तपाया तेज़ धूप में, कभी भीगाया मेह से।

हर अनुभव ने गढ़ा मुझे, बना आकृति, डाली जान,
बिखरी मिट्टी सजीवन हुई, मिली मुझे मेरी पहचान।

विष्णु टांडी
वरिष्ठ प्रबंधक (विधि),
सूचना प्रौद्योगिकी विभाग,
प्रधान कार्यालय

सृजन की पूजा

मिट्टी की नीरवता में प्राण जगाता शिल्पकार
हर स्पर्श से रचता अमर आकार।
श्रम बने साधना, कला बने पूजा,
मिट्टी से ईश्वर का रूप गढ़ा दूजा।
धैर्य, परिश्रम और आस्था का मान,
सृजन में बसता मानव का सम्मान।
मिट्टी का कण जब मंदिर सजाए,
शिल्पकार का जीवन अमर हो जाए।

नेहा जैन
ग्राहक सेवा सहयोगी,
कारेलीबाग,
वडोदरा अंचल

कलाकार

मिट्टी को साँचे में ढालता कलाकार,
हर स्पर्श में बसता उसका संसार।

कुशल हाथों की अनोखी रचना,
हर मूर्ति में झलकती भावना।

साँसों संग बहती कला की धार,
श्रम से सजे सपनों का आकार।

सृजन है उसका पूजा समान,
कला में दिखे उसका आत्मज्ञान।

रियाली पिल्लेवार
अधिकारी,
एसएमईयूएलसीसी,
धार अंचल

भक्ति, मित्रता और स्मृतियों की शाम

संगीता महाराणा
ग्राहक सेवा सहयोगी
बरामुंडा शाखा
भुवनेश्वर अंचल

भारत की विविधताओं में ओडिशा की संस्कृति अपनी सादगी और गहराई के लिए जानी जाती है। यहाँ की मिट्टी में कला, भक्ति और लोक जीवन की सुगंध घुली हुई है। समुद्र किनारे बसे मंदिरों से लेकर जनजीवन में रचे बसे उत्सवों तक, हर जगह परंपरा और आध्यात्मिकता की छाप मिलती है। यहाँ के नृत्य संगीत, लोक कथाएँ और पर्व न केवल लोगों को जोड़ते हैं, बल्कि जीवन को रंगीन और अर्थपूर्ण बनाते हैं।

ओडिशा की सांस्कृतिक परंपराओं में कई सुंदर उत्सव हैं, परंतु खुदुरुकुनी ओषा का स्थान मेरे दिल में हमेशा सबसे खास रहा है। यह व्रत भाद्र मास के रविवारों को अविवाहित लड़कियाँ माँ मंगला के प्रति श्रद्धा और अपने भाइयों की लंबी आयु की कामना के साथ करती हैं। मुझे आज भी याद है कि कैसे रविवार की शाम ढलते ही मोहल्ले की लड़कियाँ एक-एक कर घरों से बाहर निकल आती थीं। आसमान हल्के लाल सुनहरे रंग से रंगा होता और हवा में पूजा की धूप अगरबत्ती की खुशबू फैली रहती। हम सब मिलकर छोटी-सी वेदी सजाते, उस पर माँ मंगला की प्रतिमा रखते और दीपों से रोशनी करते।

जब सूर्यास्त की अंतिम किरणें आसमान में घुल रही होतीं, तभी हम सब माँ मंगला की आराधना शुरू करते। भक्ति गीतों की धुन, जलते दीपों की लौ और साथ बैठी सहेलियों के चेहरों की आभा,वह दृश्य आज भी मेरी आँखों में ताजा है। सबसे रोचक क्षण होता था खुदुरुकुनी कथा का पाठ। कहानी सुनते हुए अक्सर मन भावुक हो उठता था, कैसे तपोई ने अपने भाइयों की रक्षा के लिए माँ मंगला की आराधना की थी। उस पल मुझे हमेशा अपने भाइयों की याद आती और मन में उनके लिए शुभकामनाएँ उमड़ पड़तीं। पूजा समाप्त होने के बाद हम सब प्रसाद बाँटते कभी खीर, कभी पिठा या चकुली। स्वाद में मिठास से ज्यादा उस प्रसाद में हमारी एकजुटता और प्रेम घुला होता। फिर देर तक हँसी ठिठोली चलती, कभी नाच गाना। वह शाम धीरे-धीरे एक उत्सव का रूप ले लेती थी।

लेकिन इस बार मेरे लिए यह उत्सव कुछ खास और साथ ही थोड़ा भावुक भी रहा। दरअसल, इस वर्ष मेरी शादी हो गई है, और अब मैं अपने ससुराल में नई जिम्मेदारियाँ निभा रही हूँ। इसलिए यह साल मेरे लिए आखिरी खुदुरुकुनी ओषा रहा। पूजा करते समय सहेलियों के बीच बैठी तो थी, पर मन बार-बार यह सोच रहा था कि अगले साल जब यह दीप जलेंगे, मैं उनमें शामिल नहीं हो पाऊँगी। दीपों की रोशनी के बीच आँखें कई बार नम हो गईं। पूजा समाप्त होने के बाद जब सब प्रसाद बाँट रहे थे और हंसी मजाक चल रहा था, मैं चुपचाप एक ओर बैठी सोच रही थी कि समय कितनी जल्दी बदल जाता है। बचपन से लेकर युवावस्था तक जो पर्व मेरे जीवन का हिस्सा रहा, आज वह सिर्फ स्मृति बनकर रह जाएगा। फिर भी, यह सत्य है कि परंपराएँ केवल रस्में नहीं होतीं, बल्कि भावनाओं और रिश्तों की डोर होती हैं। खुदुरुकुनी ओषा ने मुझे भाई-बहन के रिश्ते की पवित्रता, सहेलियों की एकता और माँ मंगला के प्रति आस्था सिखाई है।

आज यह पर्व मेरी स्मृतियों में हमेशा एक सुनहरी संध्या की तरह जीवित रहेगा। दीपों की झिलमिलाती लौ, माँ मंगला की स्तुति में गूँजते भक्ति गीत, सहेलियों की हंसी और प्रसाद की मिठास से भरा हुआ। उस शाम का वातावरण केवल पूजा तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें हमारी मित्रता की गर्माहट और भाई के लिए की गई सच्ची प्रार्थना भी समाई हुई थी। यह अंतिम खुदुरुकुनी ओषा मेरे लिए सिर्फ एक परंपरा नहीं, बल्कि बचपन की यादों और भावनाओं का खज़ाना है। भले ही जीवन अब नई राह पर बढ़ रहा है, पर वह संध्या मेरी आत्मा में दीपक की तरह सदा उजियारा फैलाती रहेगी और हर भाद्र मास के रविवार को मुझे अपनी ओर खींच लाएगी। आज यह पर्व मेरी स्मृतियों में एक सुनहरी संध्या की तरह रहेगा सुगंधित, अनुपम और सदा जीवित। हर बार जब भाद्र मास का रविवार आएगा, मेरी आँखों के सामने वही शाम तैर उठेगी दीपों की लौ, भक्ति गीत, सहेलियों की हंसी और माँ मंगला की कृपा का आभास।

तुझको क्षितिज तक जाना है

1906 में जन्म हुआ,
व्यापारियों ने नींव रखी।
मायानगरी से शुरू हुई,
भारत के गौरव की गाथा?
कुछ स्वदेशी सपनों ने मिलकर,
अर्थतंत्र की कहानी गढ़ी।
स्वाभिमान का तारा बनकर,
तुझको दिखलाना है,
तुझको क्षितिज तक जाना है।

बैंक ऑफ़ इंडिया का जन्म हुआ,
भारत माँ का मान बढ़ाया।
गाँव-गाँव फैला उजियारा,
हर दिल में विश्वास जगाया
हर युग में नवाचार अपनाया,
तकनीक संग कदम बढ़ाया।
राष्ट्रीयकरण का गौरव पाकर,
कृषि आँगन को महकाया।
नील गगन का तारा बनकर,
तुझको क्षितिज तक जाना है,
तुझको क्षितिज तक जाना है।

रुकना नहीं, थकना नहीं,
तुझे मंजिल से भटकना नहीं।
हर बाधा को अवसर बना,
तुझको क्षितिज तक जाना है।
आँधी चले, तूफान आए,
सपनों के दीप न बुझने पाए,
विश्वास को साथी बनाना है,
तुझको क्षितिज तक जाना है।

पथ चाहे कठिन हो काँटों भरा,
साहस से रखना हर कदम,
संघर्ष को ही गीत बनाना है,
तुझको क्षितिज तक जाना है।

जब थक जाए जीवन की राह,
याद रखना ये संदेश महान,
आसमान से ऊंचे अरमानों को सजाना है,
तुझको क्षितिज तक जाना है।

मत सोच कि राह आसान होगी,
तूफानों से लड़ना होगा,
जो भी कठिनाई आए सामने,
उनसे लड़कर बढ़ना होगा।
हवा रुकती है तो रुक जाए,
पर कदम ना तेरे रुकने पाए,
अंधेरा हो घना तो हो जाए,
रोशनी का दीया न बुझने पाए।
सूरज जैसा जलना होगा,
बिना थके तुझे चलना होगा,
तुझको क्षितिज तक जाना है।

हिम्मत तेरी पहचान बने,
संघर्ष तेरा सम्मान बने,
तेरी आँखों में अंगार जले,
अश्रु नहीं ललकार बहे,
भारत माँ का वैभव लौटाना है,
तुझको क्षितिज तक जाना है।
तुझको क्षितिज तक जाना है।।

गोपाल प्यारेलाल नागर
मुख्य प्रबंधक,
आरबीसी,
हुबल्ली-धारवाड़ अंचल

बेटियां

नन्हें-नन्हें कदमों से,

घर रौनक करें बेटियां।

अपनी किलकारियों से,

घर उमंग करें बेटियां।

भाग्यशाली होते वो लोग,

जिनके घर जन्में बेटियां।

पढ़-लिख के माता-पिता का,

नाम करें बेटियां।

कभी अफसर बनके, कभी मंत्री बनके,

देश को रौशन करें बेटियां।

क्यूं मार देते हैं लोग बेटियों को,

शायद कीमत पता नहीं उनकों।

दो कुलों को रौशन करें बेटियां,

मायके-ससुराल दोनों की लाज रखे बेटियां।

वरूण कुमार
शाखा प्रबंधक,
छेरत शाखा,
आगरा अंचल

सरहद-सम्बोधन

नमस्ते! मैं सीमा हूँ
मैं बँटवारे की नौकरी पर हूँ
कहीं जमीन के
कहीं सम्पति के
कहीं इन्सानियत के

मुझे ताज्जुब होता है
लड़ते है मेरे लिए
जान लेते हैं
जान देते हैं।।

एक तरफ धर्म जीता
उस पार सिसकियाँ भरता
एक तरफ जिहाद
दूसरी तरफ छत्तीस बिरादरी
पर ऐसा क्यों?
शायद! मेरा वास मस्तिष्क में भी।।

जब-जब लाँघने की बात
तोपे दहाड़ने लगती
न्यूक्लियर परिवारों में फटने की होड
कहीं वादियों में
फटे सर, कटे कर
ये ओछी इंसा के मोड

एक गोली सन-से
मेरी झालीदार दिवार के पार
कर किसी परिवार का नाश्ता
मचाती रहती हाहाकार।।

अमित कुमार
राजभाषा अधिकारी
कोयम्बत्तूर आंचलिक कार्यालय

नराकास पुरस्कार

एसटीसी नोएडा - नराकास सम्मान राजभाषा (प्रथम पुरस्कार)

नागपुर - नराकास प्रोत्साहन पुरस्कार (सर्वश्रेष्ठ)

रत्नागिरी - नराकास प्रोत्साहन पुरस्कार (प्रशंसनीय)

नराकास पुरस्कार

केंदुझर - नराकास प्रोत्साहन पुरस्कार (प्रशंसनीय)

दिल्ली एनसीआर - नराकास प्रोत्साहन पुरस्कार (प्रशंसनीय)

मैनपुरी - नराकास प्रोत्साहन पुरस्कार (प्रशंसनीय)

माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण - गांधीनगर, दिनांक 13.09.2025

माननीय संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण - इंदौर, दिनांक 17.10.2025

माननीय संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण - उज्जैन, दिनांक 17.10.2025

पूजा बडोला
वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा)
एसटीसी नोएडा